तरुण भारत संघ

तरुण भारत संघ

प्रगति प्रतिवेदन

2003-2004

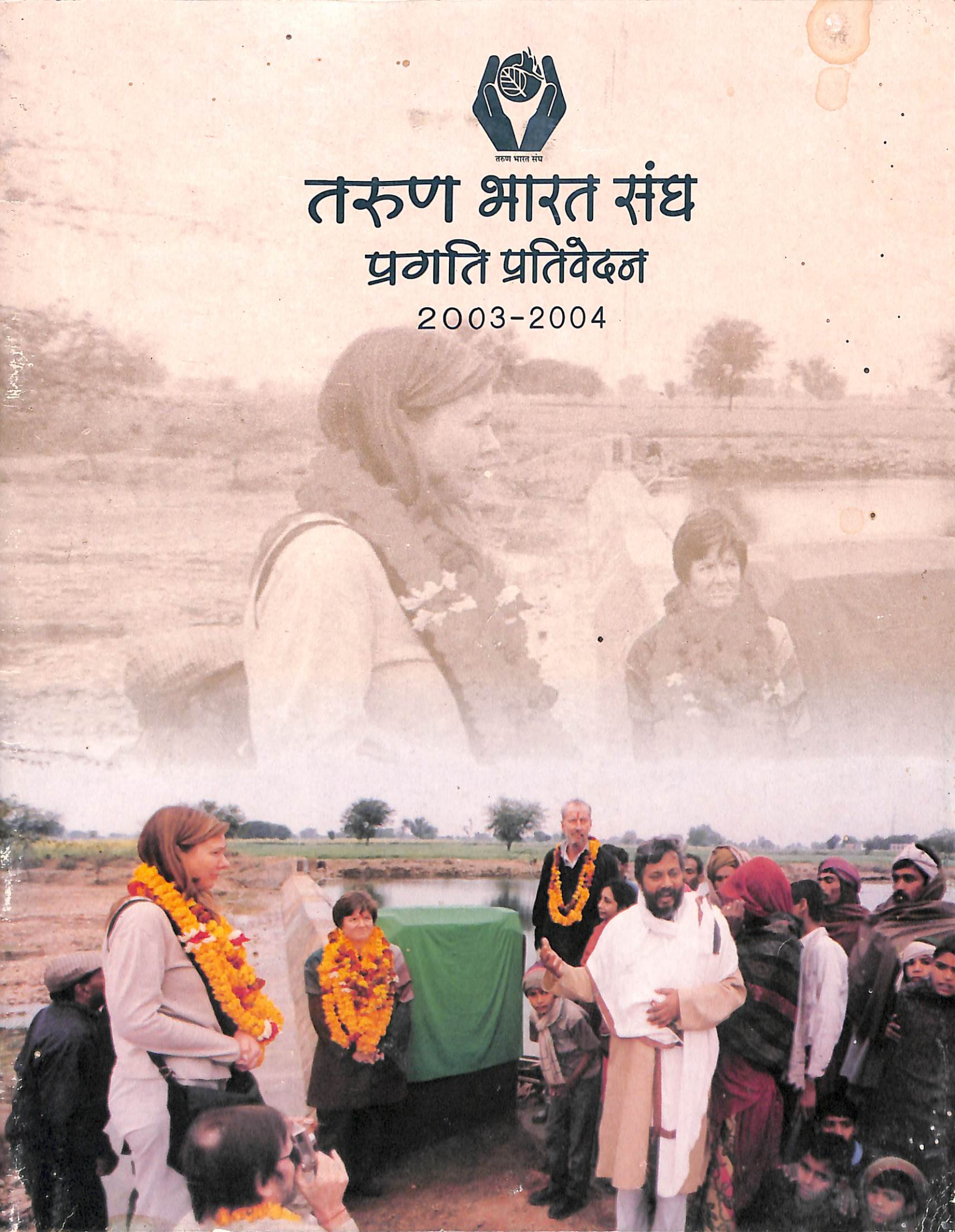

महिला पानी चेतना पद यात्रा
दिनांक :- 17 से 21 तक
आयोजक :- तरुण भारत संघ

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2003-04

तरुण भारत संघ

तरुण भारत संघ

भीकमपुरा-किशोरी, वाया थानागाजी

जिला अलवर (राजस्थान) 301022

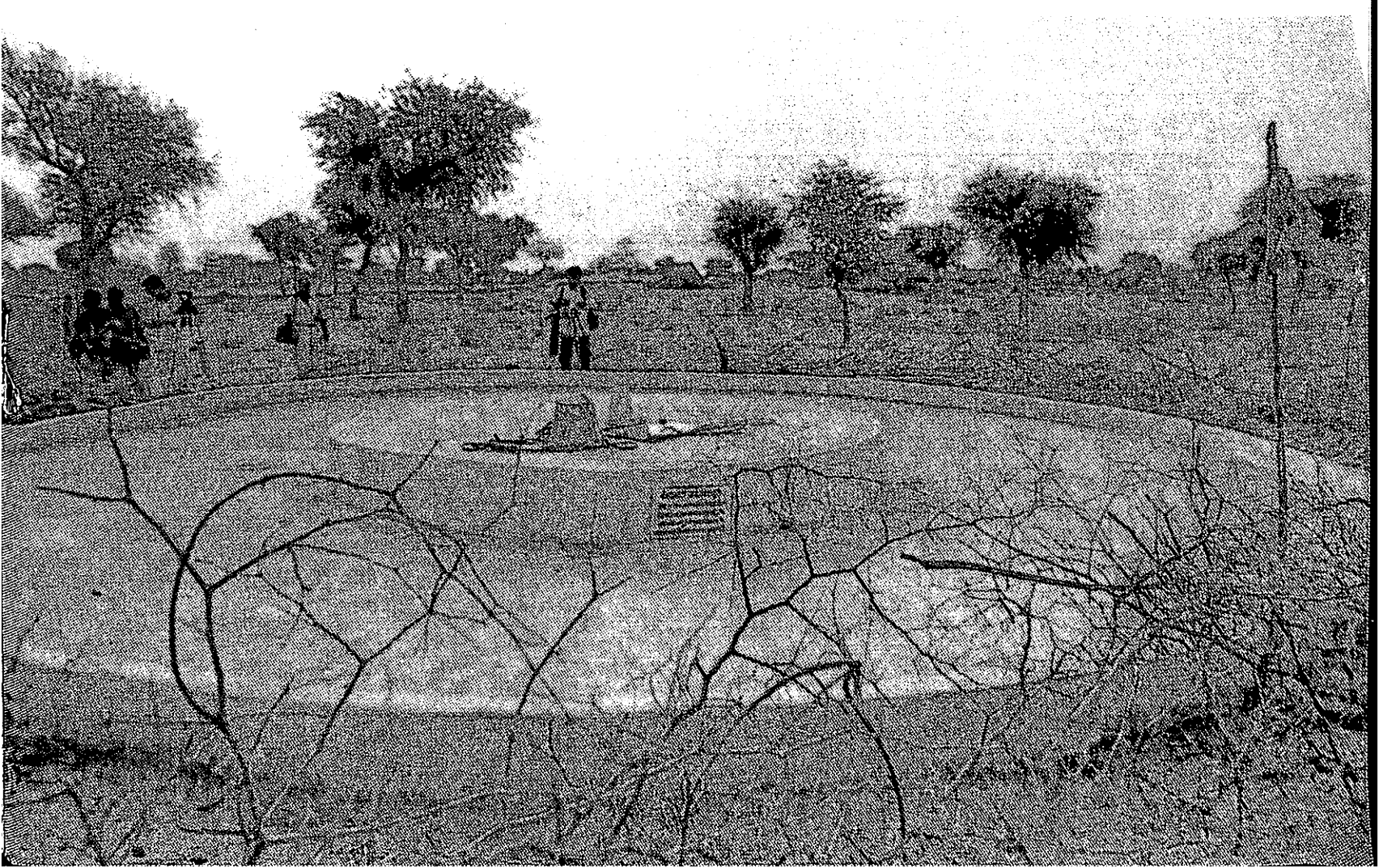

तरुण भारत संघ की कार्यकारिणी

श्री राजेन्द्र सिंह	(अध्यक्ष)
श्री गुरुदास अग्रवाल	(उपाध्यक्ष)
श्री कन्हैया लाल गुर्जर	(महामन्त्री)
श्री जगदीश गुर्जर	(कोषाध्यक्ष)
श्री गोपाल सिंह	(सहमन्त्री)
सुश्री देवयानी	(सहमन्त्री)
श्री अनुपम मिश्र	(सदस्य)
श्रीमती किस्तुरी देवी	(सदस्य)
श्रीमती मीना सिंह	(सदस्य)

तरुण भारत संघ का सलाहकार मण्डल

श्री गुरुदास अग्रवाल
श्री सिद्धराज ढड्ढा
श्री अनुपम मिश्र
श्री एम. एस. राठौड़
श्री राजीव धवन

दो शब्द

वर्ष 2003-2004 तरुण भारत संघ के उद्देश्यों एवं जल संरक्षण कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर जन-जन तक पहुँचाने का वर्ष रहा है। इस वर्ष खास तौर से हमारे देश की जन विरोधी नई राष्ट्रीय जलनीति 2002 को जनोन्मुखी जल नीति बनवाने का सघन प्रयास किया गया है। इस घोषित जलनीति में जल को संपत्ति करार दिया है, जिसके चलते पानी को खरीदने और बेचने की स्वायत्तता भी प्रदान की गई है। जब कि जल ही जीवन का आधार है, और जल एक प्राकृतिक संसाधन है ना कि संपत्ति।

इस वर्ष तरुण भारत संघ ने भारत की राष्ट्रीय जल नीति को बदलवाने के लिये नैतिक दबाव तो डाला ही है, साथ ही देश भर के अधिकांश राज्यों में राष्ट्रीय जल चेतना यात्रा के माध्यम से सभाएं आयोजित करके मौजूदा जलनीति के विरोध में जन-आन्दोलन भी खड़ा किया है। इस वर्ष दक्षिण, पूर्वोत्तर एवं उत्तर भारत के राज्यों में राष्ट्रीय जल चेतना यात्रा की गई है।

उक्त चेतना यात्रा में जनविरोधी राष्ट्रीय जलनीति का विरोध करने के साथ ही साथ सरकार द्वारा नदियों को नदियों से जोड़ने की अव्यावहारिक कल्पना की भी डट कर खिलाफत की गई। नदी जोड़ परियोजना तकनीकी व भौगोलिक दृष्टि से अव्यावहारिक तो है ही, साथ ही बहुत ही खर्चीली भी हैं। और किसी भी तरह से इन्हें जोड़ने का दुष्प्रयास किया गया, तो उसका दुष्परिणाम बहती हुई नदियों को सुखा देने के रूप में ही प्राप्त होगा। नदियों को नदियों से जोड़ने की योजना बड़ी ही भयानक कल्पना हैं। नदियों को नदियों से जोड़ने के बजाय नदियों को समाज से जोड़ेंगे तो शुभ होगा।

इन्हीं सब उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय जल चेतना यात्रा का करना बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा है। इस साल मानसून की मेहरबानी पिछले चार साल के भयंकर अकाल के बाद हुई, जिसके कारण तीन चार सालों में बनाये गये कुछ बाँध तो पहली बारिश में ही पानी से लबालब भर गये। लेकिन इस अकाल के दौरान सरकार द्वारा बनाये गये तालाबों के निर्माण में बरती गई लापरवाही के कारण लगातार श्रृंखला में बने 7 जोहड़ एक के बाद एक टूटते जाने के कारण पानी के अत्यधिक दबाव से ग्रामवासियों के साझे श्रम से बना बहुचर्चित लाव्हा का वास बाँध भी बहुत झटका झेलते हुए आखिर टूट ही गया। पर खेद है कि सरकारी विभागों को अपनी गलती का पश्चाताप भी नहीं है।

ग्रामवासियों के साझे श्रम से किये गये जल संरक्षण कार्यों को देखने देश-विदेश के प्रमुख व महत्वपूर्ण मेहमान भी यहाँ आये जिनमें ब्रिटेन के राजकुमार प्रिंस चार्ल्स प्रमुख अतिथि थे।

तरुण भारत संघ द्वारा किया गया इस वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण कार्य '' तरुण जल विधापीठ '' की स्थापना है। तरुण जल विद्यापीठ का स्वरूप वर्तमान में चल रहे सरकारी व गैरसरकारी शिक्षण संस्थाओं के स्वरूप से बिलकुल अलग होगा। यहाँ पर किसी भी तरह की उपाधि/ डिग्री नहीं दी जायेगी बल्कि जल संरक्षण के परंपरागत ज्ञान से कार्य करने की वास्तविक शिक्षा प्रदान की जायेगी जिससे प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति जल संरक्षण कार्य में समाज को अपनी सेवा दे सके।

श्री गोपाल सिंह
सहमंत्री
तरुण भारत संघ

आइये ! गांधीजी का सपना पूरा करने में जुटें

यदि गांधी जी आज होते तो हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कब्जा बढ़ रहा है, उसको रोकने की सबसे अधिक कोशिश करते। बापू ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के साम्राज्य के खिलाफ हथियार के रूप में चरखे को चुना था। समाज के मेहनत-पसीने की कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा विदेशी कपड़ों के माध्यम से मैनचेस्टर में जा रहा था। आज से सौ साल पहले गांधी जी अन्याय के खिलाफ लड़ने और उसका प्रतिकार करने के लिए अवतरित हो चुके थे। उन्होंने रंगभेद के अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह की शुरुआत सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका के उस रेलवे स्टेशन से की थी, जहां उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी वे उस डिब्बे से इसलिये उतार दिये गये, क्योंकि उसमें गोरे लोग ही सफर कर सकते थे। रंगभेद के खिलाफ 20 वर्ष तक लड़कर विजयी होकर वे जब भारत वापिस लौटे, तब भारतीय किसानों का शोषण करने वाली नील की खेती के खिलाफ उनका संघर्ष शुरू हो गया। लेकिन बापू इन सबका विरोध करते हुए भी बुनियादी बदलाव और गुलामी की संस्कृति से मुक्ति का रास्ता भी ढूंढ रहे थे। इस खोज में बापू को गुलामी से मुक्ति का सहज रास्ता चरखे में मिल गया।

बापू ने चरखे को अपनी क्रान्ति का प्रतीक माना था, उनका मानना था कि आज की यांत्रिक और केन्द्रित मुनाफाखोर अर्थव्यवस्था का जवाब विकेन्द्रित तथा स्वावलम्बी उत्पादन पद्धति ही हो सकती थी। चरखा उस अर्थव्यवस्था का न केवल प्रतीक था, बल्कि साधन भी था। इसलिये बापू ने चरखे को अपनी बुनियादी लड़ाई का हथियार बना लिया था। चरखा, हिंसा व शोषण रहित श्रमनिष्ठ समाज-रचना का प्रतीक था। और हमें गुलाम बनाने वाली व्यवस्था को तोड़ने वाला एक मजबूत शस्त्र भी था। आज हमारे जीवन के आधार प्राकृतिक संसाधन जल, जंगल और जमीन सभी समाज के हाथों से निकलते जा रहे हैं और सबसे अधिक पैसे की लूट पानी के जरिये बढ़ रही है, और आगामी पांच वर्षों में भारत की कमाई का एक बड़ा हिस्सा पानी के व्यापार से विदेश जाने की तैयारी कर रहा है। यदि आज बापू होते और उन्हें जैसे ही यह गंभीर खतरनाक खेल समझ में आता तो वे तुरन्त ही इसे रोकने की मुहिम खड़ी करते। अन्याय अत्याचार, और हिंसा को रोकने की इस मुहिम का आधार उन्हें केवल भाषण नहीं सूझता, बल्कि वे चरखे की तरह कोई रचनात्मक उपाय ही ढूंढते और इसका रचनात्मक उपाय तो 'तालाब' ही था।

तालाब के निर्माण में कोई भी पैसा किसी कम्पनी को देने की जरूरत नहीं होती। समाज के लोग अपने श्रम और समझ से मिलकर तालाब का निर्माण कर सकते हैं। तालाब के निर्माण की प्रक्रिया समाज को जोड़ने से शुरू होती है। समाज मिलकर और संगठित होकर ही तालाब का काम शुरू करता है। और इसमें जो वर्षा का पानी रुकता है, वह धरती का कटाव रोककर, प्रकृति के शोषण को समाप्त करता है। तालाब गांव के गरीब से गरीब इंसान को और पशुओं को बिन पैसे पानी मुहैया कराता है और धरती का पेट भरता है। इससे कुओं का पुनर्भरण होता है और यह काम पूरे समाज को पानीदार यानी ''जल सम्पन्न'' और स्वाभिमानी बनाता हैं। जैसे चरखा समाज को श्रमनिष्ठ और समृद्ध बनाता है, वैसे ही ''तालाब'' भी विश्व के गरीबतम प्राणी को बिन पैसे जिंदा रखता है। तालाब से ही बोतल बन्द पानी का व्यापार रूप में हो रहा शोषण रुक सकता है। जब गांव में एक निर्मल जल का तालाब होगा तो रास्तों पर प्याऊ बनेंगी क्योंकि तालाब ही प्याऊ का जन्मदाता है। जब जगह-जगह पर, बस स्टैण्ड और रेलवे स्टेशन पर प्याऊ होगी तो कोई भी खरीदकर पानी नहीं पीयेगा। तालाब ही सबको पानी पिलाता है, जीवन देता है और आगे बढ़ाता है। बिना किसी से कुछ लिये, केवल उसकी मेहनत और समाज-भावना के बदले।

हम जीवन में तालाब बनाने की प्रेरणा गाँधी के चरखे से ले सकते हैं। गांधी जी को चरखा ढूंढने में बहुत समय और मेहनत करनी पड़ी थी क्योंकि तब तक विदेशी कपड़ा हमारे चरखे को निगल चुका था। अभी तालाब खत्म तो हो रहे है। परन्तु कन्याकुमारी से कश्मीर तक और गुवाहाटी से गुजरात तक आज भी कुछ तालाब बचे हुए हैं। छत्तीसगढ़, उड़ीसा, राजस्थान और गुजरात के गांवों में तो आज भी तालाब खरे हैं। और तालाब के अलावा दूसरा सहारा समाज को जिंदा रखने के लिए मौजूद ही नहीं है। बहुत से गांव केवल तालाब के पानी पर जिंदा हैं। इन गावों की जिन्दगी बिन पैसे भी तालाब के किनारे बची रहेगी। गांधी जी ने जब चरखा चुना तब चरखे की भूमिका भी कुछ आज के तालाब की तरह ही थी। किन्तु सौ साल पहले पानी की लूट के बादल लोगों के सिर पर नहीं मंडरा रहे थे। पानी सब जगह सहजता से उपलब्ध था। कहीं-कहीं दूर कठिनाइयों से भी मिलता था। पर बिन पैसे मिलता था।

1 अप्रैल, 2002 के जिस दिन भारत के लिये नई सरकारी जलनीति घोषित हुई, उस दिन यदि बापू जीवित होते तो तालाबों की अस्मिता, संस्कार और संस्कृति को बचाने के लिए सत्याग्रह शुरू कर देते। क्योंकि पानी सबको जीवन का आधार देने वाला सामलाती संसाधन है। हवा व पानी के बगैर वन्यजीव, पेड़, मनुष्य, पशु, पक्षी किसी का भी जीवन सम्भव नहीं है। ऐसे संसाधनों का सरकारीकरण अथवा निजीकरण नहीं किया जा सकता। गांधी जी अपनी आँखों से भारत की इस जलनीति या अनीति को पढ़ते, तो वे आजादी के बाद हुए भारतीय समाज के साथ सबसे बड़े धोखे से समाज को सावधान करने के लिए निकल पड़ते अथवा समाज के साथ मिलकर सत्याग्रह शुरू कर देते।

बस, वे एक ही बात कहते कि पानी किसी सरकार का बनाया हुआ नहीं है, समाज और सृष्टि का साझा संसाधन है। और इसे साझी जिंदगी के साझे प्रयासों से ही बचाना है। वे प्रतिदिन फावड़ा उठाकर तालाब बनाने के लिए लोगों के साथ श्रमदान करने में लग जाते। तालाब तो श्रमदान का ही प्रतीक है। जैसे चरखा। चरखे और तालाब के व्यवहार में कोई मूलभूत फर्क नहीं है। ये दोनों ही समाज में श्रम निष्ठा को कायम रखने वाले और समाज को अपने हाथ से काम करके खाने की प्रेरणा देने वाले काम हैं।

चरखा श्रम से चल सकता है। तालाब भी निजी श्रम से बन सकता है। चरखे से कता सूत कपड़ा बनाने तक की अपनी यात्रा में समाज के कई वर्गो को जोड़ता है। इसी प्रकार तालाब भी समाज के कई वर्गों को निर्माण प्रक्रिया में जोड़ता है। यह साझे हित को साधने वाला कम खर्च का बड़ा उपक्रम है। समाज को स्वावलम्बी बनाने का तथा धरती से जितना हम लेते है, उतना ही अपनी मेहनत से लौटाने का संदेश देता हैं। यह प्रकृति के पोषण की भूमिका अदा करता है। ईशावास्य उपनिषद् के मंत्र 'त्येनतक्तेन भुंजिथाः' को और गीता के यज्ञ कर्म - देवान्यावयताऽनेन, ते देवा भवयन्तु वः परम्परम् भावयन्तः श्रेयः परमावास्ययः को साधने वाला हैं। तालाब भारत की संस्कृति और समाज का प्राण रहा है। समाज अपना काम करने के साथ-साथ तालाब बनाने का काम भी सदा ही अमावस्या और पूर्णिमा के दिन शरीर श्रम करके पूरा करता था। ये दोनों दिन समाज में सामलाती कार्यों को पूरा करने के लिए निर्धारित करके रखे थे। आज यह परम्परा हम से टूटती जा रही है। बापू इसी परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए हमारे समाज को खड़ा करते। वे युगपुरुष थे। हर काम के लिए वे सदैव यही कहते थे, कि ''मैं कुछ नया नहीं कर रहा हूँ। समाज की ही अच्छी परम्पराएँ और अच्छे काम छूटते जा रहे हैं, उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए समाज को खड़ा होना चाहिए।''

बापू ने अपने जमाने में कुछ रचनात्मक कार्यों को करने हेतु कार्यकर्ताओं की एक ''ब्रिगेड'' तैयार की थी। आज वे शायद पानी को बचाने, सहेजने का काम तालाबों के द्वारा करने हेतु उन्हें प्रेरित करते। आज बापू का काम करने वाले कार्यकर्ताओं के सामने पानी जैसे जीवन के प्राण-सत्य के निजीकरण और व्यापारीकरण को रोकने की सबसे बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार करके जहां-जहां भी काम शुरू होंगे वहां पर पूंजीवाद और साम्प्रदायिकता की फूट और लूट भी अपने आप रुकने लगेगी। हमारे देश को अपने पैरों पर खड़ा होने, स्वावलम्बी बनने की चाह जागेगी। यही एक रास्ता होगा 21वीं शताब्दी में बापू को सच्ची श्रद्धांजलि देने और चरखे का पुनरुद्धार करने का भी।

आजादी के आन्दोलन में चरखे ने भारतीय समाज में जो ऊर्जा के प्राण फूंके, वह ऊर्जा अब तालाब भी पैदा करेगा। इसलिए आज पानी पर प्रकृति और समाज का हक कायम रखने की मुहिम तालाब से शुरू करें। तालाब गांधी जी की स्वराज्य की कल्पना को पूरी करेगा। खेती में सिंचाई के लिए निर्भरता तथा पीने के पानी हेतु बोतल की बिक्री बन्द करेगा। पानी पर सबका समान हक बनाने में कारगर साबित होगा। आइये, हम सब मिलकर गांधी जी की कल्पना के ग्राम स्वराज्य को साकार करने हेतु तालाब बनाने में जुटें।

राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष

घटना चक्र ...

अप्रैल			
	1 अप्रैल	2003	वर्धा में राष्ट्रीय जल सम्मेलन
	2 अप्रैल	2003	वर्धा से राष्ट्रीय जल यात्रा के तीसरे चरण की शुरुआत
मई			
	29 मई	2003	कान्चीपुरम में राष्ट्रीय जल सम्मेलन
	30 मई	2003	कान्चीपुरम से राष्ट्रीय जल यात्रा के चौथें चरण की शुरुआत
जून			
	5 जून	2003	विश्व पर्यावरण दिवस पर संगोष्ठि
जुलाई			
	9 जुलाई	2003	समाज द्वारा निर्मित बहुचर्चित लाहा का बास बाँध सरकारी लापरवाही एवं प्रशासन हठधर्मिता के कारण टूटा
अक्टूबर			
	2 अक्टूबर	2003	ग्रामसभा शिविर तरुण आश्रम, भीकमपुरा
	5 अक्टूबर	2003	राजस्थान की स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ बैठकर जल साक्षरता अभियान में सहभागी बनाने की रूपरेखा तैयार
नवम्बर			
	2 नवम्बर	2003	ब्रिटेन राजकुमार प्रिंस चार्ल्स का भ्रमण
दिसम्बर			
	18 दिसम्बर	2003	राजस्थान जल नीति सम्मेलन
	19 दिसम्बर	2003	सरिस्का संरक्षण सभा का गठन एवं कार्यकारिणी की घोषणा
जनवरी			
	21 जनवरी	2004	स्वीडन संसद की विकास मंत्री करिना जामलीन व उनके प्रतिनिधि मण्डल के द्वारा जल संचय के कार्यों को देखना
	30 जनवरी	2004	मारवाड़ के महाराजा श्री गजसिंह द्वारा भांवता के जल संचय के कार्यों को देखना
फरवरी			
	6 फरवरी	2004	हेमतराव देशमुख (श्रम मंत्री) महाराष्ट्र सरकार के द्वारा संस्था के कार्यों को देखना
मार्च			
	2 मार्च	2004	पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार का वितरण
	9 मार्च	2004	गंगोत्री से गंगा जल बचाओ यात्रा शुरू
	19 मार्च	2004	पटना में राष्ट्रीय जल सम्मेलन

जल संरक्षण एवम् संवर्द्धन के कार्य - जल संसाधन विकास एवं प्रबन्धन के उद्देश्य

''जब ग्रामीण सारे मतभेद को भूलकर एकजुट होते हैं और वर्षा जल का संग्रहण करते हैं तो असंभव भी संभव हो जाता है। इस सफलता को हम दो शब्दों में बाँध सकते हैं: पानी और लोग। जिसका उदाहरण, नीमी गांव के समाज द्वारा एकजुट होकर तरुण भारत संघ के साथ मिलकर किया गया अद्‌भुत जल संरक्षण कार्य है।''

पर्यावरण एवं विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली

1. उपयोग योग्य समस्त जल संसाधनों के अधिकतम उपयोग के लिए विकास, सतही जल, भू-जल तथा अनुपयोगी जल का उपयोग, अधिकतम आर्थिक उन्नति व सामाजिक उत्थान के लिए।
2. सिंचाई एवं जल निकास परियोजनाओं का एकीकृत योजनाबद्ध एवं बहु-उपयोगी आकलन, स्वीकृति एवं क्रियान्वयन-जल प्रबन्धन तथा सतही भू-जल विकास।
3. सतही एवं भू-जल के मिश्रित उपयोग को सम्मिलित करते हुए जल संसाधन के चरम उपयोग हेतु दोहन।
4. पेयजल को प्राथमिकता देने के साथ विभिन्न क्षेत्रों में जल का न्यायोचित वितरण।
5. जल संसाधनों का विभिन्न क्षेत्रों में अधिकतम उत्पादन हेतु अधिकतम उपयोग।
6. बाढ़ सुरक्षा जल निकास सुविधा एवं सूखे के समय भी न्यूनतम आवश्यक जल वितरण।
7. शहरीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण होने वाले जल प्रदूषण में कमी करना तथा जल गुणवत्ता को ग्रहण करने योग्य स्तर तक सुनिश्चित करना।
8. विद्यमान सिंचाई व्यवस्थाओं, सम्पत्ति तथा सिंचाई निर्माण कार्यों की समुचित सुरक्षा एवं रख-रखाव।
9. जनसमुदाय एवं प्राकृतिक पर्यावरण पर परियोजनाओं के कारण होने वाले प्रतिकूल प्रभावों को कम करना।
10. लाभान्वित काश्तकारों की जल योजना एवं प्रबंधन में भागीदारी को प्रोत्साहन, जल उपयोग समितियों के गठन व उनके द्वारा आर्थिक व भौतिक आधार पर सिंचाई योजनाओं का प्रबन्धन।

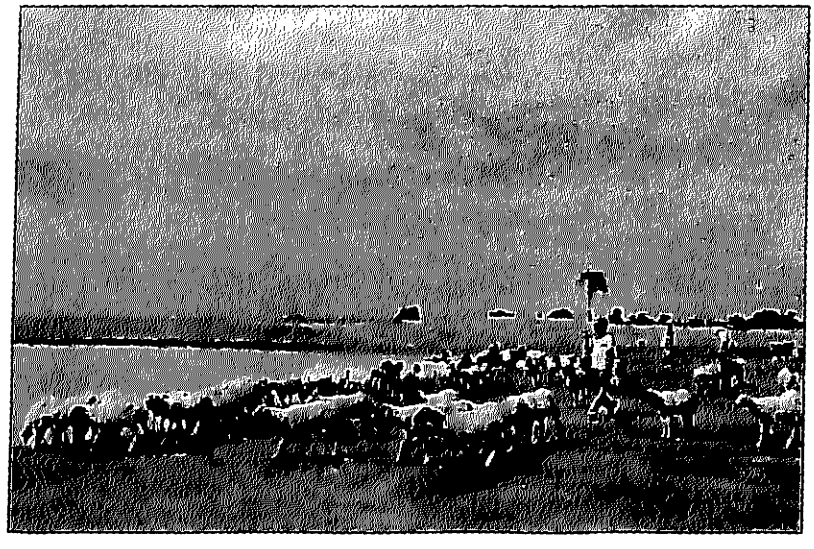

11. उपयुक्त जल दर, जल बचत युक्तियों एवं प्रयोगों द्वारा सभी क्षेत्रों में जल संरक्षण को शिक्षा अभियानों द्वारा प्रोत्साहित करना।
12. अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं शिक्षाकर्मियों के तकनीकी एवं वैज्ञानिक स्तर को बढ़ाना।
13. योजनाओं के चालू करने क्रियान्वयन एवं रख-रखाव हेतु राज्य सरकार के सभी माध्यमों (एजेन्सियों) में समन्वित एवं दक्षतापूर्ण निर्णयन की क्षमता को विकसित करना।
14. जल योजना के विकास, रख-रखाव व प्रबन्धन के निजी निवेशकों व उद्यमियों को प्रोत्साहन।

शेखावाटी में जल संवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए जल साक्षरता पदयात्रा का शुभारम्भ करता हुए राजेन्द्र सिंह

15. पीने के पानी व औद्योगिक मांग व अन्य उपयोग के लिए पानी के संकट के निराकरण हेतु भूमिगत जल भण्डार के पुनर्भरण पर विशेष ध्यान दिया जाए।

इस वर्ष संस्था ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आर्थिक सहयोग के साथ-साथ गाँव का अभिक्रम जगाकर तथा गाँव का सहयोग लेकर जल संरक्षण व संवर्धन की दिशा में अलवर, जयपुर, सवाई माधोपुर के अलावा राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में भी जल संरक्षण के कार्य किये हैं तथा वहाँ के समाज को प्रेरित किया है। जल संरक्षण का कार्य ग्रामीण विकास मंत्रालय, सीडा, के सहयोग से किया गया।

1. जल संरक्षण के कार्यों के लिये अकाल प्रभावित राज्यों का स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ संवाद

20वीं सदी के अन्त में व इक्कीसवीं सदी के आरम्भ के भीषण अकाल को देखते हुए तरुण भारत संघ ने राज्य स्तरीय स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ समाज को अकाल से मुक्ति दिलाने के लिये काफी गहन चर्चाएँ की हैं तथा जल संरक्षण के कार्यों के लिए ग्रामीण विकास मन्त्रालय, सीडा, फोर्ड फाउन्डेशन को अपने-अपने क्षेत्र की आवश्यकतानुसार एक कार्ययोजना बनाकर देने के लिए प्रस्ताव लिए है। जिससे समाज को अकाल के समय कुछ रोजगार मिल सके। साथ ही साथ भविष्य में अकाल की विभीषिका से मुक्ति के लिए गाँव समाज के जल संरक्षण के संसाधन विकसित हो सके।

2. जल संरक्षण एवं जल संवर्धन के लिए जन जागृति कार्यक्रम

संस्था ने वर्षभर अपने कार्य क्षेत्र में समाज के बीच जाकर जल चेतना का कार्य किया है। इसके लिए संस्था के कार्यकर्ताओं ने गाँव-गाँव में पदयात्राएँ, ग्रामीण बैठकें, दीवार लेखन व शिविर- सम्मेलनों का आयोजन किया, जिसमें समाज के अपने संसाधनों को विकसित करने के लिए आगे आना आवश्यक है। इस वर्ष संस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय जल वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय जल यात्रा का आयोजन किया।

ग्राम गढ़ बसई में गुरु सागर (एनीकट) के नींव भराव का कार्य करते हुए ग्रामीणवासी

समुदाय आधारित वन्य जीव संरक्षण कार्यक्रम

तरुण भारत संघ के द्वारा वन्य जीव संरक्षण एवं जंगल संरक्षण की सुरक्षा में वहाँ के निवासियों की भूमिका को प्रमुख मानते हुए सरिस्का के आसपास के 288 गाँवों में सरिस्का के प्रति आई उदासीन भावना को दूर कर वन एवं वन्य जीवों के प्रति नई सोच का संचार किया गया है। संस्था ने इस कार्य में समाज के विभिन्न वर्ग के, ग्रामीण, ग्वालों, महिला, पुरुष, विद्यार्थी, शिक्षकों एवं वनकर्मियों आदि से बातचीत की है। सरिस्का के आसपास के 60 स्कूलों के शिक्षकों व विद्यार्थियों के साथ सतत सम्पर्क बनाये रखना तथा बच्चों के लिए वन्य जीव-जंगल संरक्षण के शिविर आयोजित कर वन एवं वन्यजीव संरक्षण के लिए लेखन, चित्रण, वार्ताओं एवं नाटकों की प्रतियोगिताएं की है। जिससें बच्चों में अपने वनों व वन्यजीवों के प्रति प्रेम व सहानुभूति की भावना जागृत हुई हैं ।

सरिस्का संरक्षण सभा

सरिस्का संरक्षण सभा एक स्वैच्छिक जनतांत्रिक एवं छोटे-बड़े 288 गाँवों का एक संगठन है। इस संगठन की उत्पत्ति तरुण भारत संघ के जल संचय के साथ-साथ जंगल संरक्षण हेतु जन चेतना अभियान के दौरान पिछले 20-22 सालों के परिणामस्वरूप हुई है।

सरिस्का संरक्षण सभा में समुदाय की भागीदारी के प्रमुख बिन्दु यह हैं –

- प्रत्येक गाँव में सरिस्का संरक्षण समूह
- सरिस्का संरक्षण मण्डल प्रत्येक रेंज स्तर पर
- सरिस्का संरक्षण सभा अभयारण्य स्तर पर

इन सरिस्का संरक्षण संगठनों के कार्य - अवैध कटाई पर रोक लगाना

- शिकारियों पर नजर रखना तथा गलत कार्यो को रोकने हेतु वन विभाग के अधिकारियों को सूचित करना ।
- समाज में वन व वन्यजीवों के महत्व को समझाना ।
- आस-पास गाँव में वृक्षारोपण व गोचर विकास के कार्य करना ।

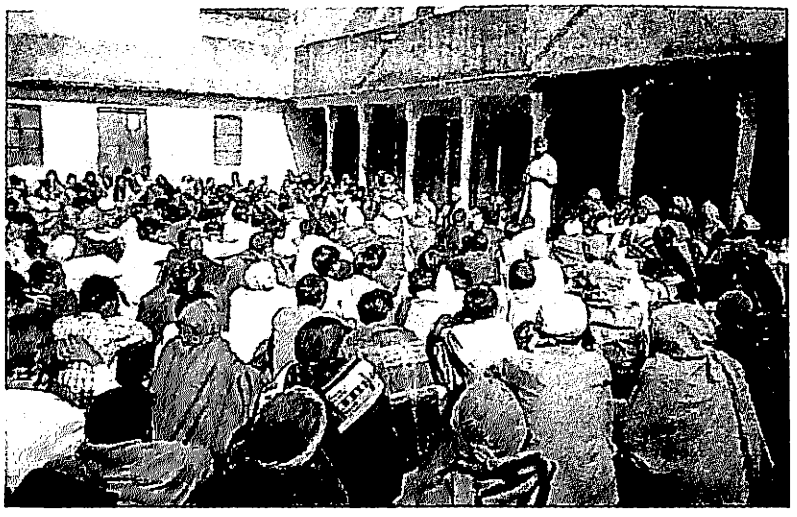

चौहनों के रामपुरा में जंगल संरक्षण के लिए ग्रामीणों की आमसभा को सम्बोधित करते हुए श्री जगदीश गुर्जर

चौहनों के रामपुरा में जंगल संरक्षण के लिए क्षेत्रीय गांव की बैठक का आयोजन एवं वन प्रेमियों को सम्मानित करते हुए ग्रामीण वन प्रेमी जनता

जैव विविधता अध्ययन कार्य

"Current management structure for protected areas were designed under different conditions and are not necessarily able to adapt to the new pressure. Conservation will only succeed if we can build learning organizations, network and solve their own problem."

Mr. Kanhaiya Lal Gujjar
Secretary General (T.B.S.) at
Vth World Park Congress (S. Africa)

जैव विविधता कार्यक्रम के अंतर्गत संस्था ने अरवरी क्षेत्र की भौगोलिक पारिस्थितिकी, वनस्पति, सामाजिक जीवन-शैली व आर्थिक स्तर के आधार पर समाज के साथ बातचीत की। क्षेत्रीय, बौद्धिक लोगों से समय-समय पर बैठक आयोजित की गई तथा सर्वे आदि से विभिन्न प्रकार के आँकड़े लेकर गहन अध्ययन कर एवं अरवरी क्षेत्र के लिए जैव विविधता के लिए दस्तावेज तैयार किया गया जिसको पर्यावरण मंत्रालय द्वारा आयोजित सेमिनारों में प्रस्तुत किया जा चुका है। इस दस्तावेज में संस्था द्वारा किये गये कार्यो से आये बदलाव को आसानी से समझा जा सकता है। ऐसे दस्तावेज जिला व राज्य स्तर पर गाँव के विकास की योजनाओं को बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

जैव विविधता के विषय पर तरुण भारत संघ के महामंत्री श्री कन्हैया लाल जी ने डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में हुए पाँचवें विश्व पार्क कांग्रेस सम्मेलन में प्रमुख वक्ता के तौर पर भाग लिया। इस सम्मेलन में श्री कन्हैया लाल जी ने कहा कि आज 21वीं शताब्दी में हर जगह संरक्षित क्षेत्रों पर आधुनिक भौतिकवाद का दबाब बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में अरवरी नदी के जल ग्रहण क्षेत्र में हुए जल संरक्षण कार्यों की प्रक्रिया इसका स्थाई समाधान हो सकती है। उन्होंने अलवर क्षेत्र के भांवता गाँव में ग्रामीणों द्वारा स्वसंरक्षित एवं स्वपोषित " भैंरुदेव लोक वन्यजीव अभयारण्य "का उदाहरण देते हुए कहा कि बिना स्थानीय लोगों की मदद के किसी भी संरक्षित क्षेत्र को बचा पाना, अकेले सरकार के बस की बात नहीं है।

उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि वर्तमान नीतियां आज के बढ़ते नई किस्म के आधुनिक भौतिकवादी दबाव का

जैव विविधता पर दक्षिण अफ्रिका, डरबन में विश्व सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए कन्हैया लाल गुर्जर

सामना करने में सक्षम नहीं हैं। अतः हमें नई जनोन्मुखी जैव विविधता नीति की आवश्यकता है, जिसमें सरकार स्थानीय ग्रामवासी एवं स्वैच्छिक संगठनों की समान एवं सक्रिय भागीदारी व जिम्मेदारी हो । आज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए उन्होंने कुछ निम्नलिखित सुझाव भी दिये :

1. केन्द्र व प्रदेश सरकार ग्राम पंचायत व ग्रामवासियों को वन संरक्षण के लिये उत्साहित करे ।
2. प्रत्येक वन संरक्षित क्षेत्र में स्थानीय जनता के सुझाव, भागीदारी एवं जिम्मेदारी सुनिश्चित की जाये ।
3. वर्तमान परिवेश में स्वैच्छिक संगठनों का सहयोग लिया जाये । जो इस कार्य के लिये माहौल व क्षमता-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।

श्री कन्हैया लाल जी ने संरक्षित वन क्षेत्र में सरकार द्वारा संरक्षित, अवैधानिक, अनियंत्रित एवं अवैज्ञानिक विधि से हो रहे खनन का विरोध भी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर जताया जिसके परिणामस्वरूप वहाँ उपस्थित अनेक देशी-विदेशी खनन मालिकों ने उसी मंच पर अपनी गलती स्वीकारी और उसे सुधारने का पूर्ण आश्वासन भी दिया ।

राष्ट्रीय जल नीति तथा नदियों को जोड़ने आदि मुद्दों से लेकर जन चेतना कार्य

"जल ही जीवन का आधार है। जल पर समाज, सृष्टि, पेड़-पौधों व जीव जन्तु का समान हक है। परन्तु आज की उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी प्रकृतिमय संरक्षण की संस्कृति को नष्ट कर दिया है। इस हक को पानी पर बरकरार रखने की मांग के साथ-साथ पानी बचाने वालों को प्रोत्साहित करने व दुरुपयोग करने वालों को दण्डित करने का कानून बनना चाहिए।"

श्री राजेन्द्र सिंह
अध्यक्ष, राष्ट्रीय जल बिरादरी

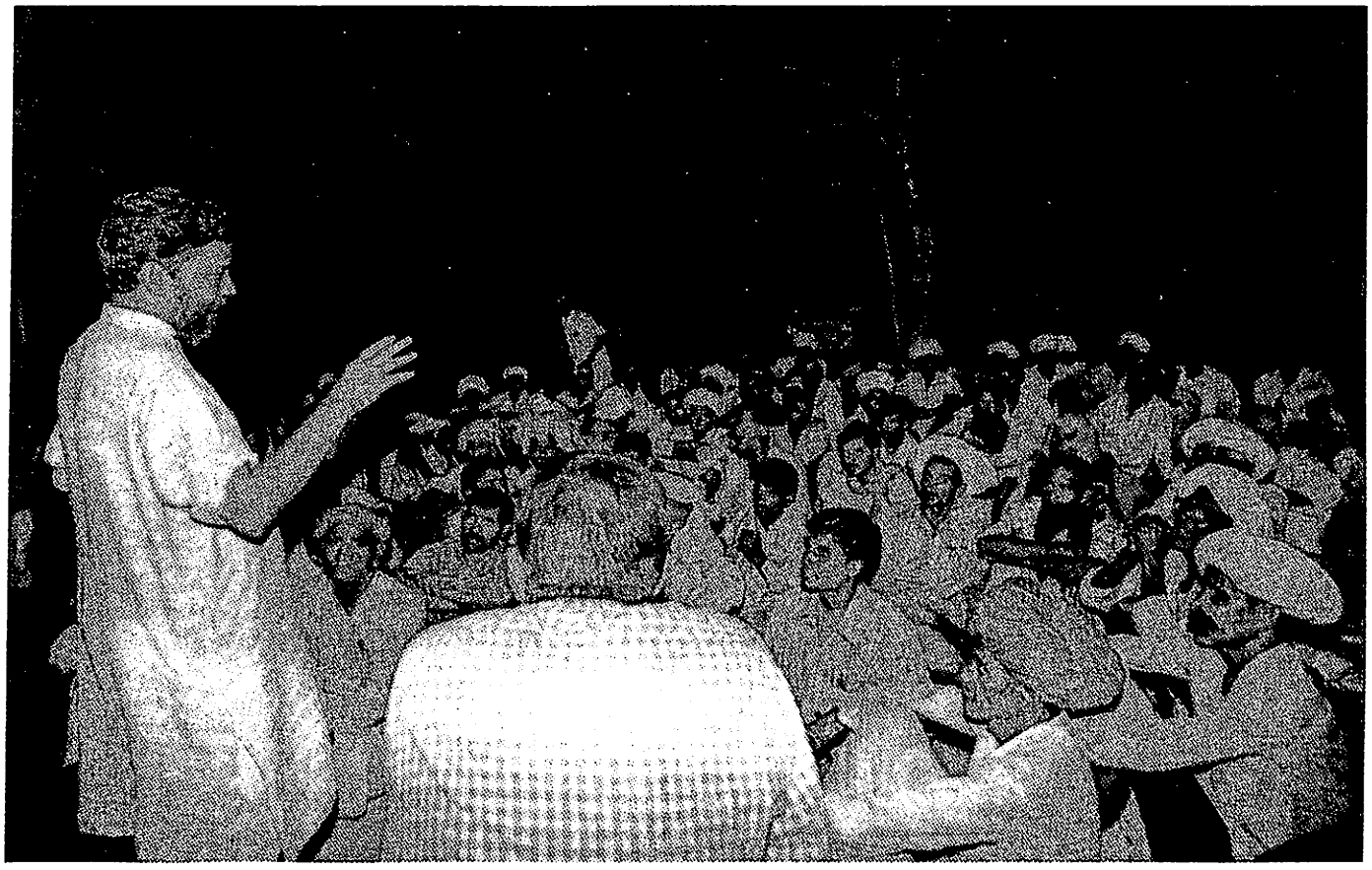

इस वर्ष तरुण भारत संघ ने जल संवर्द्धन व प्रबन्धन के साथ-साथ वर्तमान राष्ट्रीय जल नीति को जनोन्मुखी कराने तथा नदियों को जोड़ने आदि मुद्दों से लेकर जन चेतना का कार्य किया। पूरे देश में राष्ट्रीय जल नीति पर शिविर, सेमिनार, जलयात्राएं आयोजित करके लोगों से बातचीत की।

राजस्थान में जल नीति की आवश्यकता

जल एक मुख्य प्राकृतिक संसाधन होने के साथ ही आधारभूत मानवीय आवश्यकता है। राज्य की जल संसाधन विकास परियोजनाओं के संचालन तथा रखरखाव व राज्य की मजबूत आर्थिक स्थिति के लिए एवम् नागरिकों, पेयजल, कृषि व सिंचाई, औद्योगिक क्षेत्र की आवश्यकताएं, बिजली उत्पादन तथा रोजगार की उपलब्धता के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन सभी आवश्यकताओं को देखते हुए जल नीति का निर्धारण व सृष्टि व समाज के हित में किया जाना चाहिए। सभी उपलब्ध सतही एवम् भू-जल संसाधनों के न्यायोचित, सामयिक व सुदृढ़ आर्थिक विधि से उपयोग के लिए सुपरिभाषित जन्नोमुखी जल जरूरत पुरी करने वाली विकेन्द्रित जल प्रबन्धन का बढ़ावा देने वाली जल नीति की आवश्यकता हैं।

राजस्थान देश का पहला सबसे बड़ा राज्य है, जिसका क्षेत्रफल 34.27 मिलियन हैक्टेयर है जो कि सारे देश के भौगोलिक क्षेत्र के 10 प्रतिशत से भी अधिक है। देश की 5 प्रतिशत से ज्यादा आबादी इस राज्य में निवास करती है तथा यहां के सतही जल संसाधन, पूरे देश के सतही जल संसाधनों का मात्र एक प्रतिशत है। राज्य की सभी नदियों में पानी की आवक वर्षा पर निर्भर है तथा इन्हें 14 प्रमुख नदी बेसिन तथा 59 सब-बेसिनों में बांटा गया हैं।

राज्य के सभी सतही जल संसाधन मुख्य रूप से दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में सीमित हैं। राज्य के पश्चिमी भाग में एक बहुत बड़े क्षेत्र में कोई सुपरिभाषित जल निकास बेसिन नहीं है। इस प्रकार राज्य में जल संसाधन न केवल कम है, अपितु वितरण भी समय व स्थान के आधार पर अत्यधिक त्रुटिपूर्ण है।

भूजल का योगदान विशेष रूप से सिंचाई एवं पेयजल के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भूजल के दोहन की स्थिति भी संतोषजनक नहीं हैं। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ सतही सिंचाई द्वारा जल उपलब्ध कराया जाता है। वहाँ (कृषि के लिए) भूजल के उपयोग न करने की प्रवृत्ति दलदलीय क्षेत्र की समस्या उत्पन्न करती है। इसके विपरीत राज्य के कई क्षेत्रों में भूजल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिसके कारण जल स्तर लगभग तीन मीटर प्रतिवर्ष की दर से नीचे जा रहा है। फलस्वरूप कई क्षेत्र डार्क जोन में आ गये हैं।

- इस दिशा में राजस्थान जल बिरादरी द्वारा इस साल में दो राज्य स्तरीय सम्मेलन किये गये, पहला जयपुर में किया गया।
- दूसरा दो दिवसीय सम्मेलन 17 व 18 दिसम्बर, 2003 को तरुण आश्रम भीकमपुरा में सम्पन्न हुआ जिसमें पूरे प्रदेश से आये लोगों ने भाग लिया तथा राजस्थान की जनोन्मुखी जलनीति बनाने पर विचार किया गया।

राष्ट्रीय जल सम्मेलन, पटना (बिहार) में सम्बोधित करते हुए मेधा पाटकर

पानी के लिये की गई राष्ट्रीय यात्राएँ, जल सम्मेलन

''भारत यात्राओं का देश है जिनमें से कुछ याद रहती हैं और कुछ भुला दी जाती हैं लेकिन राजनीति,व्यक्तिगत व धार्मिक स्वार्थों को छोड़ कर की जाने वाली यात्राएँ हमेशा ही समाज पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं ।''

– महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय जलयात्रा का तीसरा चरण 1 अप्रैल, 2003 को राष्ट्रीय जल सम्मेलन के साथ सेवाग्राम आश्रम, वर्धा से प्रारम्भ हुआ । वहाँ से यह यात्रा महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, आन्ध्रप्रदेश व तमिलनाडू में गई । गंगाजल बचाओ यात्रा गंगोत्री से शुरू होकर गंगासागर में सम्पन्न हुई । यह यात्रा उत्तर प्रदेश, बिहार व पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में गई ।

राष्ट्रीय जल सम्मेलन

तीन राष्ट्रीय जल सम्मेलनों का आयोजन राष्ट्रीय जल बिरादरी द्वारा तरुण भारत संघ भीकमपुरा, थानागाजी के सहयोग से किया गया । इन सम्मेलनों में पूरे भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये लोगों द्वारा पानी के महत्व और समाज व जल के रिश्तों के मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की ।

1 अप्रैल, 2003 को पहला राष्ट्रीय जल सम्मेलन सेवाग्राम आश्रम, वर्धा में हुआ । दूसरा सम्मेलन 29 मई, 2003 को कान्चीपुरम में सम्पन्न हुआ एवं तीसरा 19 मार्च, 2004 को पटना में हुआ ।

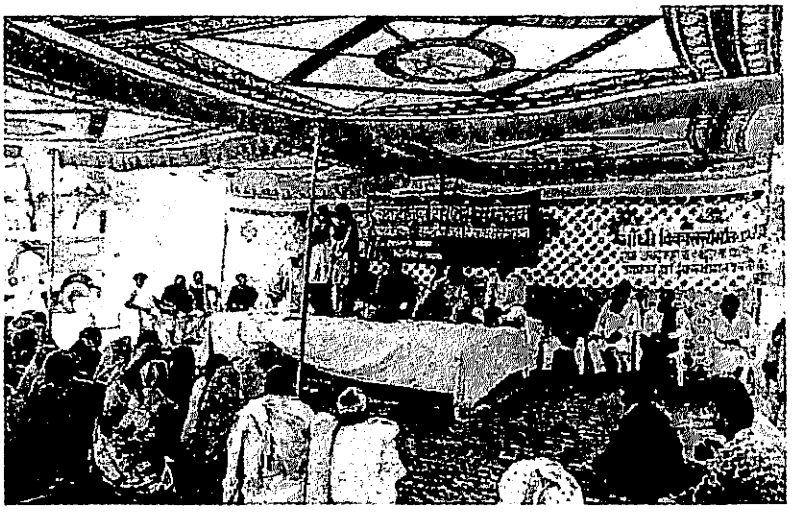

राजस्थान के ढूंढार क्षेत्र चाकसू कस्बे में क्षेत्रीय जल सम्मेलन मंच पर चाकसू के एस.डी.एम. के साथ राजस्थान जल बिरादरी के अध्यक्ष एम.एस. राठौर

इस अवसर पर विभिन्न प्रान्तों से आई महिलाओं ने प्रतीकस्वरूप सात खाली मिट्टी के घड़ों में पानी भरकर धरती का पेट भरने का संकल्प लिया। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए विभा गुप्ता ने इस मौके पर कहा कि समुदाय द्वारा वर्षा के जल को रोकना आज की परिस्थितियों को देखते हुए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जैसे तरुण भारत संघ ने ग्रामीणों के साथ मिलकर कार्य किया है उससे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस अवसर पर राष्ट्रीय जल बिरादरी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह ने जोर देकर कहा कि भारतवर्ष की नदियों को जोड़ने के स्थान पर समाज को नदियों से जोड़ने की बात जरूरी है। धरती के ऊपर की नदियों को जोड़ने के स्थान पर यदि धरती के अन्दर की नदियों (भूजल भण्डारों) को जल संवर्धन के द्वारा भर दिया जाये तो नदियां स्वतः ही जुड़ जायेंगी।

सम्मेलन के दौरान पानी से सम्बन्धित प्रश्नों और राष्ट्रीय जल नीति के मुख्य बिन्दुओं पर व्यापक चर्चा हुई एवं निम्नलिखित बातों पर सहमति हुई :

1. जल ही जीवन का आधार है और इस नाते जल किसी एक की सम्पत्ति नहीं है, बल्कि समाज का साझा संसाधन है।
2. नदियों के निजीकरण व जोड़ने का विरोध किया गया, नदियों को समाज से जोड़ने का संकल्प लिया गया।
3. अलग-अलग भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों की जरूरतों के अनुसार जनोन्मुखी जल नीति बनाई जाने की मांग की।
4. धरती में पानी का पुनर्भरण किया जाये।
5. महिलाओं को जल नीति में अधिकार दिया जाये।
6. पानी के स्रोतों को प्रदूषण मुक्त रखा जाये।
7. पानी पर समाज का हक कायम रखने हेतु राष्ट्रीय जलयात्रा जारी रहे।

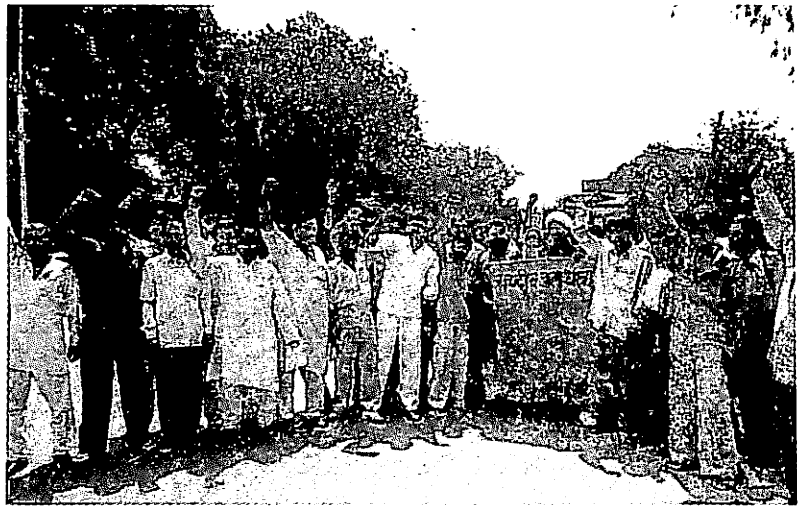

उत्तरांचल में जल सारक्षता यात्रा करते हुए उत्तरांचलवासी एवं राजेन्द्र सिंह व तरुण भारत संघ के साथी

जल विश्वविद्यालय का विचार प्रारूप।

राष्ट्रीय जल चेतना यात्रा के दौरान जो अनुभव आये उससे जल विश्वविद्यालय बनाने का विचार बना है। देशभर में पानी का काम करने वाली संस्थाओं व व्यक्तियों की क्षमताओं को बढ़ाने हेतु भी इसकी जरूरत महसूस हुई। इसमें अनपढ़ किसान से लेकर बड़े से बड़ा, पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी शिक्षा पा सकेगा। इस विद्यालय में व्यक्ति की क्षमता और कुशलता बढ़ाने के साथ-साथ ऐसी दृष्टि बनानी है, जिसमें वर्षा की एक-एक बूँद का संरक्षण करना तथा पानी के प्रबन्धन करने की रुचि का निर्माण करना हो।

जिन्होंने यह काम अनुभव से सीखा है, ऐसे सभी उम्र के लोगों के अनुभव से सीख कर और सीखना-सिखाना, दोनों को जोड़कर ही पानी के संरक्षण तथा प्रबन्धन के कार्य को आगे बढ़ाना है। इस जल विश्वविद्यालय का उद्देश्य देशभर में पानी का काम करने वाले लोगों को ढूंढकर उनसे जानकारी हासिल करना, उनकी जहां जरूरत है, वहीं काम में लगाना तथा उनकी समझ, दृष्टि, दूसरों से सीखने-सिखाने की क्षमता आदि को ध्यान में रखकर उनको जोड़ना है। इसमें हम ऐसे लोगों को रखना तथा आमन्त्रित करना चाहते हैं जो काम को सिखाना चाहते हैं तथा जिनके पास जल दर्शन हो तथा पानी के काम के सभी पहलुओं को समझने-समझाने तथा उसी के अनुरूप करने व कराने की क्षमता हो।

जल विश्वविद्यालय के लिये भवन नहीं बनाना है बल्कि इसका असली भवन तो पानी का काम करने वाले नौजवान हैं। यह एक ऐसा केन्द्र होगा जिसमें केवल भाषण या तकनीकी जानकारी ही नहीं दी जायेगी बल्कि जहां पानी की जरूरत है, वहां जाकर काम सिखाया और किया जायेगा। पूरे देश में जहां पानी के संरक्षण तथा प्रबन्धन का काम होगा, वही उसकी प्रयोगशाला होगी। यहां सब कुछ केवल काम के माध्यम से होगा। काम ही हमारे शिक्षण-प्रशिक्षण का आधार होगा। हमारे सामने केवल औपचारिक बातचीत का मॉडल नहीं होगा बल्कि एक ऐसा मॉडल होगा जिसमें उस इलाके के गोपाल सिंह, कन्हैया लाल, जगदीश, रामदयाल जैसे किसान काम करते-करते गजधर-पानीदार बने। ऐसे ही यहां काम करते-करते सभी विद्यार्थी, कारीगर, गजधर व पानीदार बनेंगे।

तरुण जल विद्या पीठ की स्थापना मिटींग में विचार-विमर्श करते हुए डॉ. जी.डी. अग्रवाल एवं आशीष कोठारी

विद्यार्थी और शिक्षक रिश्ते में कोई भिन्नता नहीं होगी। यहां कोई निष्णात या डाक्टरेट वाला नहीं होगा, यहां सभी गजधर होंगे, सब गुणी होंगे। सब एक तरह से सीखकर - सिखाने वाले, और पढ़कर केवल पढ़ानेवाले नहीं, कराने वाले और करने वाले, ऐसे लोग इस विश्वविद्यालय में होंगे। इसमें कोई तनख्वाह वाला नहीं होगा। अपनी मेहनत से समाज को व राष्ट्र को दृष्टि देने वाला ही यहां शिक्षक बनेगा । उनकी जिंदगी चलाने, घरबार, रोजी-रोटी, कपड़ा, मकान आदि जरूरतें

पूरी करने की जिम्मेदारी मिलकर पूरी करेंगे। तरुण भारत संघ भी मदद करेगा। मानदेय वाला शिक्षक या, थोड़े में जिन्दगी चलाने वाला व्यक्ति इसका आचार्य होगा।

शिक्षकों के बारे में हमारी मान्यता साफ है जो खुद स्वैच्छिक गरीबी को स्वीकार करके दूसरों को भी इस रास्ते पर चलाना सिखाएगा, जो अपनी खोज के दौरान ऋषि की तरह अपने जीवन में त्याग, तपस्या और साधना अपनाकर मेहनत से खोज करेगा, जो अपनी खोज के दौरान खुद कष्ट सह सकेगा तथा जो प्रकृति से ज्यादा नहीं लेकर तथा प्रकृति को बराबर मेहनत से वापस देता भी होगा, हमें ऐसे ही शिक्षकों की तलाश है जो इसी तरह की जीवन-शैली की रुचि विद्यार्थियों में भी पैदा कर सकें।

विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के दौरान सीखता भी रहे और जब उसकी पढ़ाई पूरी हो जाये तो वह किसी भी क्षेत्र में जाकर सीधा काम करने लग जाये। ऋषि-परम्परा के अनुसार विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जायेगा। आज के शोधकर्ताओं को खोज के दौरान अपनी पढ़ाई व काम करने के लिए प्रयोगशाला व पुस्तकालय आदि बहुत से साधनों की भी जरूरत पड़ती है, लेकिन यहां खोज करने वाला अपने काम के दौरान खुद साधना, त्याग, तपस्या के द्वारा कष्ट सह कर भी प्रकृति से कम से कम लेकर प्रकृति को ज़्यादा से ज़्यादा देने वाला बनेगा। आज के वैश्वीकरण ने शिक्षा में जो विविधता थी, वह नष्ट कर दी है। जल विश्वविद्यालय में देश की भू-सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हुए प्रशिक्षण दिया जायेगा। पानी का संरक्षण, प्राकृतिक जंगल व मिट्टी के संरक्षण पर भी निर्भर है। इसकी प्रयोगशाला पूरी जल संस्कृति और जल को बनाने वाला भू-सांस्कृतिक क्षेत्र है। विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद इस भू-सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए गांव में जाकर पानी के संरक्षण तथा प्रबन्धन का काम करेगा। यहाँ का सिद्धान्त होगा कि हमें जहां जरूरत है, वहाँ जरूरत पूरी करने का जज्बा लोगों के मन में पैदा करें। इस जज्बे को पूरा करने के लिए जो कुछ सीखकर करना चाहते हैं, हमारा विश्वविद्यालय उन्हीं के लिए शिक्षा उपलब्ध करायेगा।

पूरी दुनिया के जल सेवा भावी जलयोद्धा, जलकर्मी इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बन सकते हैं। शिक्षक बन सकते हैं। अपने क्षेत्र में पानी का काम करके लोगों को शिक्षा दे सकते हैं। इसकी भाषा मुख्यतः हिन्दी होगी। लेकिन अन्य प्रादेशिक भाषाओं व अंग्रेजी आदि भाषाओं की व्यवस्था भी आवश्यकता के अनुसार की जायेगी। इस जल विश्वविद्यालय में जो व्यक्ति, संस्था या संगठनों के कार्यकर्ता प्रशिक्षण लेना चाहते हैं, वे तरुण भारत संघ के कार्यक्षेत्र में रहकर शिक्षण पा सकते हैं। आवास व भोजन की सादा व्यवस्था तरुण भारत संघ करेगा।

हम चाहते हैं कि यह जल विश्वविद्यालय महात्मा गांधी के दर्शन तथा विकास के सिद्धान्तों पर चले। इसमें शिक्षण के दौरान किसी की आर्थिक स्थिति पर ध्यान नहीं दिया जायेगा। बड़े से बड़ा धनी तथा गरीब से गरीबतम विद्यार्थी दोनों को शिक्षा का समान अवसर दिया जायेगा। इस विश्वविद्यालय में मेहनत से, पानी के संरक्षण व प्रबन्धन के काम की खुद समझ रखने तथा दूसरों में समझ पैदा करके, प्राकृतिक संसाधनों के निजीकरण के अन्याय को रोकने वाले व्यक्तियों का निर्माण होगा।
महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में चरखे का महत्व जानकर, राष्ट्र को खड़ा करने के लिये उसका उपयोग किया था। उसी तरह आज जलयोद्धाओं द्वारा जोहड़, तालाब बनाने का महत्व लोगों को समझाकर उनको इस काम में जोड़ने का काम करना होगा। व्यक्ति निर्मित होकर जल संरक्षण तथा प्रबन्धन का काम करे। जल का काम करने के लिए व्यक्तियों की कुशलता व क्षमता बढ़ाना यह हमारा सिद्धान्त है। हम ऐसे व्यक्ति बनाना चाहते हैं जो सादा जीवन-शैली अपनाकर प्रकृति के साथ समरसता से जी सकें तथा जी प्रकृति से ज़्यादा नहीं ले और प्रकृति को ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग देते रहें।

हम अभी तक कुछ ही साधन जुटा पाये हैं। हमारी सोच है कि यह एक आत्मनिर्भर जल विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो। काम करने वाले लोगों को रहने के लिए सब तरफ जगह होगी। जिन लोगों ने पानी के काम हेतु अपना जीवन दान दिया है, जल विश्वविद्यालय उनका स्वागत करेगा।

गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों का क्षमता वर्द्धन प्रशिक्षण

इस वर्ष देश के अन्य राज्यों से आये लोगों ने संस्था द्वारा किये जा रहे जल संरक्षण के कार्य को देखा और समझा है। तरुण भारत संघ में आने वाले सरकारी, गैर सरकारी लोगों को तीन प्रकार से प्रशिक्षण दिया गया :

1. कार्य को प्रत्यक्ष दिखाना, उससे आये बदलाव की चर्चा करना
2. गाँव वालों से बातचीत करना
3. जो भी समस्या, सवाल हो, उनका समाधान करना

इस वर्ष संस्था में अप्रैल से मार्च तक देश-विदेश के विभिन्न विषयों से सम्बधित लोगों ने आकर ग्रामीण विकास के मुद्दों जल, जंगल, जमीन व समुदाय द्वारा किये गये कार्यो का अध्ययन किया है। तरुण भारत संघ में प्रशिक्षण के समय युवा वर्ग को ग्रामीण विकास से सम्बन्धित आने वाली बाधाओं से अवगत कराया जाता है तथा समस्याओं के समाधान के लिये गहन चर्चाएँ, अनुभव और युवाओं से चर्चा करके उनके आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया जाता है जिससे युवा उत्साहित मन से गाँव में आधुनिक सुविधाओं के अभाव में भी कार्य करने के लिये तैयार हो जाते हैं। कुछ नये युवा जिन्होंने ग्रामीण विकास के लिए विभिन्न संस्थाओं से अध्ययन का कार्य किया है। आगे आकर अपनी पूरी तैयारी के साथ गाँव के विकास में सक्रिय हुए हैं।

इस प्रक्रिया में तरुण भारत संघ द्वारा नवम्बर, 2003 में तीन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं जिसमें पहली कार्यशाला पीदणगढ़ मालपुरा में 9 व 10 नवम्बर, 2003 को हुई। दूसरी 11 से 13 नवम्बर, 2003 तक तिलोंनियां, अजमेर में हुई एवं तीसरी कार्यशाला 14 व 15 नवम्बर, 2003 को ढ़ांडण, सीकर में सम्पन्न हुई। इन तीनों कार्यशालाओं में कार्यकर्ता क्षमता निर्माण पर बल दिया गया।

राजस्थान की स्वयं सेवी संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ राजस्थान जल नीति पर चर्चा करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह

नई स्वयंसेवी संस्थाओं को विकसित कराने में मदद करना

तरुण भारत संघ ने पिछले 17 सालों में राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण विकास की दिशा में सोच रखने वाले व्यक्तियों के साथ मिलकर नई संस्थाओं को जन्म दिया है जिससे क्षेत्रीय समस्याओं के आधार पर राजस्थान का विकास हो और लोगों के जीवन स्तर में सुधार आये।

इसके लिये तरुण आश्रम में 5 अक्टूबर, 2003 को राजस्थान के विभिन्न हिस्सों से आई 45 स्वयंसेवी संस्थाओं ने भाग लिया। तरुण भारत संघ ने नई संस्थाओं के विकास करने में आर्थिक सहयोग, कार्यकर्ताओं का चुनाव, प्रशिक्षण के द्वारा सहयोग किया है। आज ये संस्थाएं अपने संसाधन स्वयं जुटा कर ग्रामीण विकास के कार्यो में लगी हुई हैं। नई संस्थाओं द्वारा गाँव में प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य व सामाजिक व आर्थिक रूप से स्वावलंबन की दिशा में किये जा रहे कार्यो से तरुण भारत संघ की विचारधारा को बल मिलता हैं। नई स्वयंसेवी संस्थाओं को विकसित कराने में मदद करने लिये तरुण आश्रम में 5 अक्टूबर, 2003 को राजस्थान के विभिन्न हिस्सों से आई 45 स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें भू-सांस्कृतिक, भौगोलिक, पारिस्थितिकी तथा जरुरतों के अनुसार जल नीति बनाने, परम्पारिक जल संरचना को पुनर्जिवित करने तथा नई जल संरचनाओं का निर्माण करने आदि मुद्दों पर चर्चा हुई। इसके तहत क्षेत्रों के अनुसार जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया गया है, थार में कुइयां, शेखावाटी में टांके, ढूंढाड़ में तालाब, काठेड़ा में एनीकट एवं यूपी में ताल जैसे मॉडल बनवाये हैं।

महिला सबलीकरण

तरुण भारत संघ का प्रत्येक कार्य महिला सबलीकरण आधारित रहा है। तरुण भारत संघ ने 1986 से ही महिला सबलीकरण के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कार्य किया है। संस्था का उद्देश्य महिलाओं को देश की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए अपने कार्य क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला संगठन, पर्यावरण एवं जल संरक्षण के साथ-साथ संस्था द्वारा चलाये गये विभिन्न प्रकार के जनहित के आन्दोलनों में महिलाओं की अहम् भूमिका रही हैं।

संस्था ने यू.एन.डी.पी. सहायता से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण संवर्द्धन द्वारा महिला सबलीकरण परियोजना के माध्यम से महिलाओं को देश की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया है। परियोजना के माध्यम से संस्था ने अक्टुबर 1999 से 31 मार्च 2004 तक 646 जोहड़ एनीकट, खेत तलाई 55 शिक्षण शालाएं, 325 महिला समूह, 45 पैराटीचर्स प्रशिक्षण, 345 एनीमेटर क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण, 675 महिला शिविर, 73 महिला स्वास्थ्य शिविर, 80 पर्यावरण चेतना शिविर, 4 शैक्षिणक अनुभव भ्रमण यात्रा, 27 सम्मेलन, 5 बालिका खेलखुद प्रतियोगिता, 8 पैराटीचर्स प्रशिक्षण, 8 एनीमेटर्स प्रशिक्षण, 6 दाई प्रशिक्षण, 4 पंच-सरपंच क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण और 7 पदयात्राओं का आयोजन किया गया है। वर्ष 2003-04 में परियोजना से सम्बधित सभी प्रकार के मूल्यांकनों की प्रक्रिया पूरी की गई। इस परियोजना के अंतर्गत वर्ष 2003-04 तक जल संरक्षण के कार्य में 41 जोहड़ एवं एनीकट बनाये गये तथा 30 स्कूल जून 2003 तक चलाये गये। संस्था द्वारा संचालित बालिका शिक्षा सुचारू रूप से चलती रहे तथा शालाओं में आनेवाली बालक-बालिकाओं की शिक्षा में किसी भी प्रकार की कठिनाई ना हो, इसलिए इन 30 स्कूलों को सरकारी परियोजना से जोड़ा गया। संस्था की देखरेख में चल रहे महिला समूहों को बैकों से जोड़ने में तथा आर्थिक मदद दिलाने में संस्था ने पूरा सहयोग किया है। अब सभी गतिविधियाँ महिलाओं द्वारा स्वत: चलाई जा रही है। संस्था केवल एक उत्प्रेरक का कार्य कर रही है।

सहभागीतारूप से वर्षा जल का किया गया संरक्षण प्रबन्धन से महिलाओं का बढ़ता स्वाभिमान, आत्मविश्वास के साथ जल उपयोग से हर्षित महिलाएं

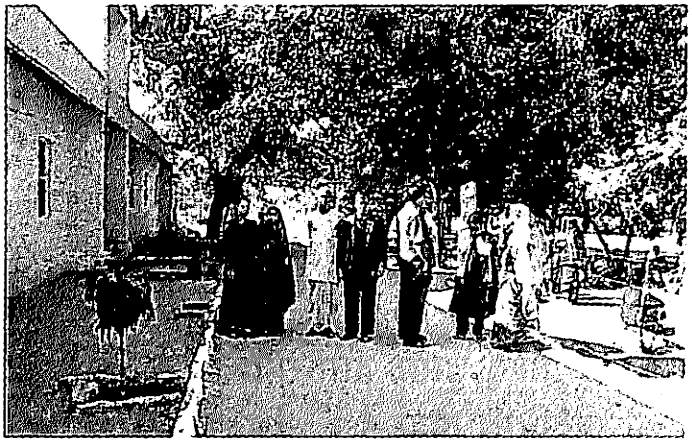

तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता श्री रामजीलाल चौबे व श्रीमति कस्तूरी देवी ग्राविस के केन्द्र जेलू गगाड़ी (जोधपुर) कैम्पस में यू.एन.डी.पी. द्वारा संचालित परियोजना का मुल्यांकन प्रशिक्षण में कम लेते हुए।

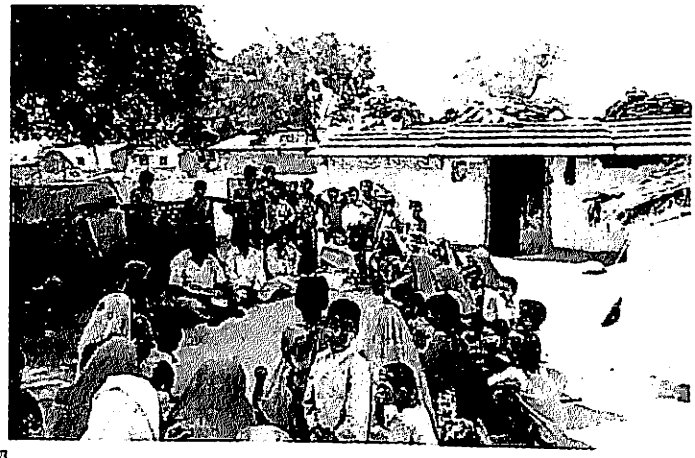

महिला एनीमेटर व महिला समूह के साथ बातचीत करते हुए यू.एन.डी.पी. द्वारा नियुक्त मुल्याकंनकर्ता श्री अमित मिश्रा

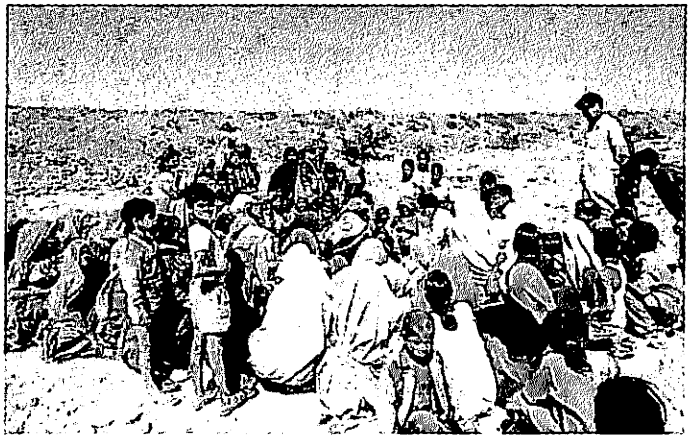

कामकाजी महिलाओं के साथ बातचीत करते हुए श्री अमित मिश्रा

कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करने हुए श्री अमित मिश्रा

समाज में अच्छे कार्यों का सम्मान

पुरस्कार किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं बल्कि इसके द्वारा समाज में किये गये कार्यों के प्रति सम्मान का प्रतिबिम्ब होता है ।

– गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर

पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार की शुरुआत तरुण भारत संघ द्वारा हुई। इसका पुरस्कार पहली बार 1990 में सरिस्का के जंगल में लगी आग को बुझाने के लिये क्रास्का गाँव को दिया गया । इसके बाद इसका स्वरूप समय के साथ-साथ परिवर्तित होता गया । इसके चयन की प्रक्रिया में एक व्यक्ति जिसने जंगल बचाने का काम किया हो, उसे वन विभाग नामित करेगा और वन विभाग के एक व्यक्ति को ग्रामसभा के द्वारा नामित किया जावेगा । सन 2001 के बाद इस पुरस्कार के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया । इसके बाद यह पुरस्कार पाँच तरह के लोगों को दिया जाने लगा जो कार्य निम्न प्रकार है :

- अन्याय के विरुद्ध लड़ाई ।
- पानी के लिये किये गये जन आन्दोलन में की गई पत्रकारिता ।
- पानी के काम को अत्यधिक रुचि से करता है।
- जल के काम के ऊपर लेखन कार्य ।
- पानी के काम की वकालत करने वाला व्यक्ति ।

कार्यकर्ताओं का सम्मान

तरुण भारत संघ के वार्षिक समारोह 2 अक्टूबर को ग्रामीण अंचलों में कार्य करने वाले महिला, पुरुष कार्यकर्ता व ग्रामसभा के सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया जिससे कार्यकर्ता व सामाजिक कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ावा मिला है।

सन 2003-2004 के सामाजिक कार्यों के लिये महाराष्ट्र से श्री ज्ञानेन्द्र कुमार तथा उत्तर प्रदेश के रामधीराज को इस साल का पुरस्कार वितरित किया गया। यह पुरस्कार गांधीवादी कार्यकर्ता श्रद्धेय श्री सिद्धराज ढड्ढा एवं अन्तर्राष्ट्रीय रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री सुनील गुप्ता की उपस्थिती में दिया गया।

संस्था द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों का सम्मान

इस वर्ष देश की अन्य सामाजिक संस्थाओं ने तरुण भारत संघ द्वारा किये गये ग्रामीण विकास के कार्यों को तथा कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया है जिससे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन हुआ है और अधिक रुचि से सामाजिक कार्यों को करने के लिए उत्साहित हुए हैं । 11 फरवरी, 2004 को श्री अर्जुन गुर्जर, गाँव-भाँवता को जल भागीरथ पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

पावणा पधारो म्हाँरे देश

संस्था द्वारा समाज के साथ मिलकर किये जा रहे कार्यों को देखने, समझने के लिए देश-विदेश से आये विशिष्ट मेहमान

- कर्नाटक सरकार के अधिकारियों एवं जन प्रतिनिधियों में सिंचाई मंत्री श्री एच. के. पाटिल तथा विधान सभा सदस्य श्री डी. आर. पाटिल आदि द्वारा संस्था के कार्यो का अवलोकन ।
- प्रिंस चार्ल्स, ब्रिटेन द्वारा 2 नवम्बर, 2003 को गाँव भाँवता कोल्याला द्वारा किये गये जल संरक्षण के कार्यो को देखा गया ।
- स्वीडन संसद की विकास मंत्री करिना जामलिन, उपाध्यक्षा ईवा जेटरबर्ग व भारत के सीडा प्रमुख ओवे एन्डरसन, श्री रमेश मुकल्ला ने 21 जनवरी, 2004 को तरुण भारत संघ द्वारा किये गये जल संरक्षण कार्यो को देखा ।
- मारवाड़ के महाराजा श्री गजसिंहजी 30 जनवरी, 2004 को जल संरक्षण कार्यो को देखने पधारे।
- महाराष्ट्र सरकार के श्रम मंत्री श्री हेमंतराव देशमुख एवं उनके साथ प्रतिनिधिमण्डल के द्वारा संस्था के जल संरक्षण कार्यो को 6 फरवरी से 7 फरवरी तक दो दिवसीय दौरे में देखा गया।

ग्राम सभा द्वारा किए गए समुदाय आधारित सामाजिक कार्यों का अवलोकन करते हुए जोधपुर के महाराजा श्री गज सिंह

इस वर्ष तरुण भारत संघ ने ग्रामीण विकास के लिये राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं से सहयोग लेकर जल संरक्षण, शिक्षा, जनजागृति, पर्यावरणीय एवं महिला सबलीकरण के मुद्दों पर कार्य किया है।

तरुण भारत संघ द्वारा किए जा रहे जल संरक्षण कार्यों को देखने आये अफगानिस्तान के प्रतिनिधि मण्डल के साथ बातचीत करते हुए राजेन्द्र सिंह

ग्राम भांवता में जल संरक्षण कार्यो को देखते हुए श्री श्री जगतगुरु साथ में कर्नाटक सरकार के सिंचाई मंत्री श्री डी.आर. पाटिल एवं अधिकारीगण

ग्राम सभा भांवता के सदस्य अर्जुन गुर्जर प्रिन्स चार्ल्स को कार्य दिखाते हुए साथ में राजेन्द्र सिंह

प्रिन्स चार्ल्स से बात चीत करते हुए राजेन्द्र सिंह

ग्राम भांवता में 2 नवम्बर 2003 को अरवरी सांसदो का इग्लैण्ड के प्रिन्स चार्ल्स से परिचय कराते हुए श्री एम.एस. राठौर

List of visitors from Organisation from April 2003 to March 2004

S.N.	Date of visit	Name of Organisation	Number of Volunteers
1	17.3.03	Dr. Raja Vikram Singh Centre for Science and Environment 41,Tuglakabad Institutional Area, New Delhi	15 Paniyatri
2	12.6.03 to 14.3.03	Shri Hanuman Prasad Sharma Prakritik Society, Ranthambhore, Sawai Madhopur, Rajasthan	71
3	18.6.03 to 23.6.03	Institute for Rural Management Academy (IRMA), Anand (Gujarat)	6 students
4	20.7.03	Shree V. N. Mishra, Jalgrahan Mishan, Dhighod, Shivpuri, Madya Pradesh	2
5	27.7.03 to 29.7.03	Ms. Shubha, Banvasi Seva Ashram Sonbhadra, Uttar Pradesh	1
6	22.8.03 to 23.8.03	Shree R.C. Ranga, H. V. Seva	2
7	22.8.03 to 23.8.03	Shri Mahendra Singh Natural Resource Management, Sohni District- Gurgaon, Hariyana	32
8	30.8.03 to 31.8.03	Rony Jseph, INFACT, Kerala	6
9	5.9.03 to 6.9.03	Shri Kedar Shrimali Gramoday Samajik Sansthan, Thali, Chaksu, Jaipur, Rajasthan	35
10	7.9.03 to 17.3.03	Jal Bhagirathi Foundation, Jodhapur, Rajasthan	14
11	4.10.03 to 5.10.03	Shri Kishanlal Deshman, Nirman Seva Sansthan Shiv Shiksha Samiti, Tonk, Rajasthan	25
12	17.10.03 to 18.10.03	Shri Rajiv Kumar Sharma R. G. M. Chchoura, Guna, Madya Pradesh	10
13	19.10.03 to 20.10.03	Vaja Naran Lakhaman, Makatpur Tehsil –Mangrol -362225	35
14	2.11.03 to 8.11.03	Shree Jagadish Prasad Sharma, IDS, Jaipur	6
15	13.11.03 to 14.11.03	Mrs. Vijaya Ramesh AKRSP (I) Gadu, Tehsil- Maliya District-Junagad, Gujarat	34
16	15.11.03 to 16.11.03	Shri Keshubhai J. Goti Lokniketan Ratanpur, Banaskatha, Gujarat	38
17	6.12.03 to 7.12.03	Shri Kanhaiya Soni, SAMPARK Jhabua Madya Pradesh	46
18	12.12.03 to 13.12.03	N. M. Sadguru Foundation, Gujarat	42
19	13.12.03 to 14.12.03	Shri R. D. Kushuwah, R. G. M. Guna	22
20	21.12.03 to 22.12.03	A. K. R.S.P. Anjar, Kutch, Gujarat	37
21	25.12.03	Dr. R. S. Yadav, Professor, G. B. Pant Agriculture. & Techi. University, Uttaranchal	8
22	7.1.04 to 8.1.04	Shree H. S. Patel, Gujarat Rural Development Corporation, Gujarat	110
23	8.1.04 to 11.1.04	Manthan Pani Vikas, Badvani, Madya Pradesh	40
24	2.2.04 to 3.2.04	Shankant S. Patil, Watershed Organisation Trust,Wardha, Maharashtra	24
25	3.2.04 to 5.2.04	Ms. Kirti Mishra, Praxis (UNDP evaluation team)	6
26	4.2.04 to 7.2.04	Pankaj Kumar,.OXFAM India , Banglore, Karnataka	9
27	6.2.04 to 8.2.04	Dr. A. A. Devikar, Mahila College, Baramati, Maharashtra	13
28	8.2.04	Shree Joy Mangalani, Vanneture, Mumbai, Maharashtra	2
29	8.2.04 to 9.2.04	A.Arokwa Mary, DHAN Foundation, Tamilnadu	14
30	22.2.04 to 24.2.04	Shree Raghav Rastogi, IIRM, Jaipur	2
31	24.2.04 to 25.2.04	Shree Vijay Kedia, Jalmitra, Aurangabad, Maharashtra	1
32	23.2.04 to 27.2.04	Dr. C. Ramachandraiah, Centre for Economic and Social Studies, Hydrabad, Andra Pradesh	1
33	26.2.04 to 27.2.04	Dr. Shyam Ghate, Aravali Institute of Managemdment, Jodhapur, Rajasthan	32
34	26.2.04 to 29.2.04	Shree Suresh Bansal, Haryana	1
35	26.2.04 to 29.2.04	Ms. Nirupama Adhikari, Purulia, Shree Subhasis Mukhopadhyay Kolkotta, West Bengal	2
36	27.2.04 to 28.2.04	Dr. Kushal Sigh Purohit, Editor, Paryavaran Digest, Ratlam, Advocate Anil Trivedi, Shree Vinay Chandra Munim, Indore, Madya Pradesh	3
37	26.2.04 to 28.2.04	Shree Ashish Kothari Kalpavriksha, 5, Shrr Dutta Krupa, 908, Deccan Gymkhana, Pune-411004 Maharashtra	1
38	27.2.04 to 28.2.04	Shree Shyam Prakash Singh, Kachch Navnirman Abhiyan, Gujarat	17
39	2.3.04 to 3.3.04	Vrikshaprem Seva Samiti, Upaleta Gujarat	40
40	4.3.04	Shre Rahul Sharma, Purnima College, Jaipur, Rajsthan	1
41	5.3.04	Shree Ritesh Agrawal, Ritadevi College, Alwar, Rajasthan	1
42	5.3.04	Shree Manish Sharma Star News, Jaipur	1

43	14.304 to 16.3.04	Dr. Om Prakash, Secretary, Equal Society, Faridabad	2
44	19.3.04 to 21.3.04	Mr. Isabhai H. Mutwa	
		Banni Vikas Trust, Poonam Commercial Room 206-207, Station Road, Bhuj	20
45	25.3.04 to 28.3.04	Mr. O. P. Thakur, President	
		Bhoo Mistra Sangh, Jamuu/Doda (J&K),	18

List of visitors - Government Officials (April 2003 to March 2004)

1	7.6.03	Shree Badri Prasad Saini, Scheduled caste Youth Development Committee, Thanagaji	2
2	2.7.03 to 3.7.03	BAIF, CES Staff, Ghatol, Distri – Banaswara,	50
3	20.7.03	Project Officer, DRDA, Dindigul District, Tamilnandu	
4	24.8.03	Shree k. Sunil Raj Kumar, (Collectorate) Project Director,	
		District Water Management Agency, Andra Pradesh	5
5	28.9.03	Shree R. Ragavai, A. E. PWD Pondichery	5
6	27.9.03 to 30.9.03	Tanveer Ahmed and Deepak Agrawal IIT, Kanpur, Madya Pradesh	2
7	10.10.03	Ms. R. Anita, Project Director, Andra Pradesh	1
8	10.10.03	Mr. G. S. Prasada Rao, IAS Andra Pradesh	1
9	12.10.03 to 18.10.03	Shree Subhash Sharma Forest Scientist, Nawashahar-144521	
		IWDP Uttaranchal, Punjab, Himachal Pradesh Haryana, Delhi	23
10	6.11.03 to 8.11.03	Smt. Pramila R. Baliga, Councilor, City Munciple Council, Banglore	12
11		Miss Suprabha Marathe, Assi. Engin. (RWH) Cell, Mumbai, Maharashtra	1
12	13.11.03	Shree Vishnu Sharma, SDC/Intercooperation, Jaipur	1
13	17.11.03 to 19.11.03	S. Gomathi, Project Officer, Gujarat	1
14	7.12.03 to 9.12.03	Shree R. A. Khan, Forester, IWDP, Uttaranchal	20
15	9.12.03 to 11.12.03	Arie Bons, Austrid Alkema(Dutch), Jenny Sarah Jecob, PWD, Pondichery	10+
16	18.12.03	Shree V. D. Sharma, Forester	1
17	18.12.03	Shree A. Rama Rao, DWMA, Assi. Conservato of Forest, Khammam	1
18	21.12.03	Shree R. C. Ranga, HFS, Pinjore, Haryana	27
19	28.1.03	Sukhor S. Dhlawai, Agriculture. Dev. Officer, Gurgaon, Haryana	50
20	27.1.03 to 29.1.03	Shree S. Narsimhaih S. Additional Project Director, Sujala Watershed Project, Banglore	3
21	30.1.03 to 31.1.03	Shree Narayan Singh, PIE, Chachoda, Guna, Madya Pradesh	9
22	1.2.04 to 2.2.04	Shre Arvind Raghuvanshi, PC, Rajiv Gandhi Jal Grahan Prabandhan Mission,	
		Bamori,Guna, Madya Pradesh	10
23	1.2.04 to 2.2.04	M. S. D. Pardeshi, Dept. of Geography, Pune University, Pune, Maharashtra	6
24	8.2.04 to 9.2.04	Dr. Suresh B. Khanapurkar, Senior Geologist, Dhule, Maharashtra	1
25	22.2.04 to 25.2.04	Shree Rajnesh Chander,IWDP, Punjab	35
26	2.3.04 to 3.3.04	Shree Ram Kumar Jatu, Assist. Project Officer, Rajasthan	40
27	3.3.04 to 6.3.04	Shree P. D.Bhatia, IWPD, Himachal Pradesh	35
28	26.3.04 to 28.3.03	Watershed Organisation Trust, Jain Niwas, Vallabh Nagar, Parali-Vaijnath,	
		Disrict- Beed Maharashtra	21

List of visitors – Foreigners (April 2003 to March 2004)

1	May 2003	National Geographic Society, Germany	2
2	27.7.03 to 30.7.03	Ramesh D. G. first German TV Delhi	1
3	27.7.03 to 30.7.03	Henny Hess and Jurgen W. Voigt, DWTVGermany	2
4	10.8.03 to 11.8.03	Eva San, Setem, Catalunya	9
5		Joanna Van Gruisen	1
6	18.9.03 to 19.9.03	Ram Krishna, US	1
7	8.10.03	Heenan Susan, Belgium	1
8	20.10.03	Reporter of Hongkong News	1
9	13.11.03	Adrian Zschokke, Zurich, Switzerland	2
10	8.12.03	Figustin Torando Gonet, Spain	5
11	13.12.03	Jacklin Coutran, (US), Jaipur	2

12		Jade Pybus,St. Christopher School, Letchwarth, U.K.	5
13	4.1.04 to 6.1.4	Fergus Sinclar, School of Agriculture and Forest Sciences, University of Wales, UK	1
14	12.1.04 to 15.1.04	Mikki Seligman, Washington,USA	1
15	14.1.04 to 16.1.04	Dr. Salim A.Q. Sheikh, Thane Maharashtra, Pabh de Salva, Paris, France	1
16	14.1.04 to 16.1.04	Stella Thomas, Global Water Fund, New York	1
17	14.1.04 to 17.1.04	Irena Salna, New York	1
18	27.1.04 to 29.1.04	Mohammad Asif, DACAAR, Afganisthan	7
19	7.2.04	Rob Horsch, USA, Ronald Bunch	2
20	7.2.04	Johnson Nkusche, Uganda, P.G. Angadharan,W.F.P.	2
21	7.2.04	J. K. Raman, WFP,Delhi, Sara Scherr, Forest Trends, Washington, Phil Dobie, UNDP,Nairobi, Kenya, Lisa Dreier, Earth Institute, USA	4
22	10.2.04 to 11.2.04	Keith Last, Korea	5
23	14.3.04 to 15.3.04	Ms. Anne Garde, Lauke Vernierl, France	2
24	26.3.04 to 27.3.04	Dr. Jyoti Gupta, Assistant Professor, Mrs. Deepshikha Ms. P. Diana Ponraja, The college of St. Catherine, USA	3
25	29.3.04 onwards	Ms. Susan , London, UK	1

List of VIP visitors (April 2003 to March 2004)

1	2.11.03	Prince Charles, London	7
2	6.2.04	Dr. Hemantrao Deshmukh, Labour Minister, Maharashtra	8
3	30.1.04	Mahraj Gaja Singh, Jodhapur, Rajasthan	2
	21.3.04	Mr. D. R. Patil, Minister, Karnataka	3
	21.3.04	Irrigation Minister of Karnataka	2
	21.1.04	Karina Jamlin, Developement Minister of Sweeden	9

List of other visitors (April 2003 to March 2004)

1	13.5.03 to 14.5.03	Shri Sunil Shrivasthav	1
2	27.5.03	Shri Saurav Ved	4
3	4.6.03	Dr. Ashok Verma	1
4	20.6.03	Ms. Rita Devid	1
5	20.6.03	Shree S. N. Spurkhapa, Leh, Ladhakh	1
6	20.6.03	Shree Hans Raj Nayak, CPC Doordharshan, New Delhi	1
7	20.9.03	Deepak Mahan, Jaipur	1
8	3.10.03	Shree Anurag , Jammia Millia Islamia, Delhi	1 student
9	8.10.03 to 10.10.03	Reporter Jansatta, Gaziabad Uttar Pradesh	4
10	12.10.03	Shree Nishant Pant New Delhi	1
11	17.10.03 to 20.10.03	Ms. Kalpana and Nitya Jecob, New Delhi	2
12	25.10.03 to 27.10.03	Mrs. Ruchi Pant, Almora, Uttaranchal	1
13	30.10.03	Shree Manish Mathur Research Scholar, Alwar, Rajasthan	1
14	11.10.03 to 12.10.03	Mrs. Neetu Kumar, BAH Films, New Delhi	4
15	12.1.03 to 13.1.03	Shree Porus Munshi, Banglore, Karnataka	1
16	4.2.03	Smt. Monika Chopra, Delhi	2
17	3.2.03 to 4.2.04	Shree A.V. Swamy, Nuapada, Orrisa	1
18	5.2.04	R.C. Jangid	
19	14.2.04 to 16.2.04	Shree R. K. Basu, Delhi	2
20	24.2.04 to 25.2.04	Acharya Shree Kamal Kishor Goswami, International Devine Love Society, Vrindavan	1
21	27-2.04 to 29.2.04	Shree Ishwarchandra, Gazipur, Shree Aravind Kuswah, Kanpurnagar	2

सीडा परियोजना के अंतर्गत किये गये फिजिकल कार्यों की सूची वर्ष 2003-04

क्र.	कार्य का नाम	गांव	तहसील	जिला	संस्था द्वारा भुगतान	श्रमदान	कुल खर्च
1.	बनी वाला जोहड़	जैस्तिका	किशनगढ़	अलवर	25,147.00	12,573.00	37,720.00
2.	पीपला वाला जोहड़	न्याना, मुसाखेड़ा	किशनगढ़	अलवर	3,989.00	1,994.00	5,983.00
3.	लाम्बी पाटी का बांध	वाजोर	किशनगढ़	अलवर	1,393.50	1,393.00	2,786.00
4.	खोली वाला बांध	न्याणा	किशनगढ़	अलवर	42,466.00	21,233.00	63,699.00
5.	ढकाव वाला बांध	भांवता	थानागाजी	अलवर	22,850.00	6,960.00	29,810.00
6.	चबूतरे वाला एनीकट	भांवता	थानागाजी	अलवर	9,660.00	12,510.00	22,170.00
7.	सांकड़ा बांध	भांवता	थानागाजी	अलवर	63,210.00	13,209.00	76,419.00
8.	गुरुसागर	गढ़बसई	थानागाजी	अलवर	1,37,870.00	53,947.00	1,91,617.00
9.	लील्या का एनीकट	लील्या	राजगढ़	अलवर	2,890.00	श्रमदान	2,890.00
10.	जोगीवाला एनीकट	जोगीवाला	राजगढ़	अलवर	80,150.00	17,168.00	97,318.00
11.	खेटावाला एनीकट	लालपुरा	थानागाजी	अलवर	47,070.00	30,620.00	77,690.00
12.	खाराड़ा का एनीकट	निजरा	थानागाजी	अलवर	29,820.00	8,800.00	38,620.00
13.	रालाला बांध	हमीरपुर	थानागाजी	अलवर	63,309.00	31,655.00	94,964.00
14.	मूकसिद्ध का एनीकट	डुमोली	थानागाजी	अलवर	6,600.00	श्रमदान	6,600.00
15.	चन्डावावाली नाडऋी	वगडी	पीपलू	टोंक	41,909.00	17,737.00	59,646.00
16.	कालानाड़ा नाड़ी	वगडी	पीपलू	टोंक	10,000.00	1,031.00	11,031.00
17.	रैगरों की नाड़ी	सूरजपुरा	मालपुरा	टोंक	14,419.00	7,216.00	21,635.00
18.	गांव वाली नाड़ी	लक्ष्मीपुरा	मालपुरा	टोंक	36,058.00	18,030.00	54,088.00
19.	पीननगढ़ एनीकट	पीननगढ़	मालपुरा	टोंक	1,46,297.00	43,576.00	1,89,873.00
20.	डागोरावाली नाड़ी	अखेरपुरा	दूदू	जयपुर	22,054.00	9,540.00	31,594.00
21.	अम्बापुर रामकुण्ड	पचेवर	दूदू	जयपुर	68,208.00	34,104.00	1,02,312.00
22.	गाटिया की नाड़ी	पचेवर	दूदू	जयपुर	71,781.00	35,890.00	1,07,671.00
23.	छापरी एनीकट	छापरी	दूदू	जयपुर	4,43,740.00	2,00,857.00	6,44,597.00
24.	सार्वजनिक नाड़ी	रसीली	दूदू	जयपुर	30,140.00	15,085.00	45,225.00

25. तिरवेनी तालाब	गरुण बसई	चाकसू	जयपुर	59,175.00	28,787.00	87,962.00
26. रामदेवजी नाड़ी	भण्डोती	किशनगढ़	अजमेर	45,475.00	22,737.00	68,212.00
27. करणी मात्या नाड़ी	गंगोती खुर्द	दूदू	जयपुर	26,356.00	6,727.00	33,083.00
28. वरना की जोहड़	वरना की ढाणी	जमवारामगढ	जयपुर	8,850.00	श्रमदान	8,850.00
29. बरडी का एनीकट	खन्याबस्सी	जमवारामगढ़	जयपुर	15,840.00	श्रमदान	15,840.00
30. तीन खजुरावाला बांध	क्रास्का	उमरैण	अलवर	51,660.00	12,500	64,160.00
31. निजरा एनीकट	रामपुरा	राजगढ़	अलवर	44,020.00	22,010.00	66,030.00
32. अगोराना का एनीकट	कुण्डला	राजगढ़	अलवर	79,020.00	कार्य चालू है	79,020.00
33. ऊणावाला जोहड़	नायला	राजगढ़	अलवर	16,550.00	8,275.00	24,829.00
34. रामस्वरूप की जोहड़	क्रास्का	उमरैण	अलवर	8,084	4,045.00	12,129.00
35. कालापापड़ा का जोहड़	दबकन		अलवर	61,289.00	28,210.00	89,499.00
36. टांके निर्माण (5)	खारी		चूरू	1,25,000.00	12,400.00	1,37,400.00
37. टांके निर्माण (5)	खोटिया		चूरू	1,25,000.00	12,407.00	1,37,407.00
38. टांके निर्माण (5)	हेतमसर		चूरू	1,25,000.00	12,407.00	1,37,407.00
39. टांके निर्माण (5)	कंकडेअ		झुंझुनूं	1,25,000.00	12,400.00	1,37,400.00
40. टांके निर्माण (5)	कंकडेअ		झुंझुनूं	1,25,000.00	12,915.00	1,37,915.00
41. टांके निर्माण (5)	देवीपुरा		चूरू	1,25,000.00	19,675.00	1,44,675.00
42. टांके निर्माण (5)	राऊताल		झुंझुनूं	1,25,000.00	19,561.00	1,44,561.00
43. टांके निर्माण (5)	खाटिया गोदारा		चूरू	1,25,000.00	19,751.00	1,44,751.00
44. टांके निर्माण (5)	देवास		सीकर	1,25,000.00	19,751.00	1,44,751.00
45. टांके निर्माण (5)	सरावाखुर्द		झुंझुनूं	1,25,000.00	12,400.00	1,37,400.00
46. टांके निर्माण (5)			चूरू	1,25,000.00	36,864.00	1,61,864.00
47. टांके निर्माण (5)	हेतमसर			1,25,000.00	12,407.00	1,37,407.00
48. टांके निर्माण (5)	खेरड़ी		सीकर	1,25,000.00	13,210.00	1,38,210.00
49. टांके निर्माण (5)	खोटिया		चूरू	1,25,000.00	12,437.00	1,37,437.00
50. टांके निर्माण (5)	खोटिया		चूरू	1,25,000.00	12,437.00	1,37,437.00
51. टांके निर्माण (5)	देवास		सीकर	1,25,000.00	12,184.00	1,37,184.00
52. टांके निर्माण (5)	डोकवा		चूरू	1,25,000.00	19,447.00	1,44,447.00

सोनिया फाउण्डेशन परियोजना के अंतर्गत किये गये फिजिकल कार्यों की सूची- वर्ष 2003-04

क्र.	कार्य का नाम	गांव	तहसील	जिला	संस्था द्वारा भुगतान	श्रमदान	खुल खर्च
1	कालानाड़ा की नाड़ी	कालानाड़ा	निवाई	टोंक	49,703.00	22,117.00	71,820.00

फोर्ड फाउण्डेशन परियोजना के अंतर्गत किये गये फिजिकल कार्यों की सूची-वर्ष 2003-04

क्र.	कार्य का नाम	गांव	तहसील	जिला	संस्था द्वारा भुगतान	श्रमदान	कुल योग
1	पापड़ावाला बांध	लावा का बास	थानागाजी	अलवर	62,160.00	30,000.00	92,160.00
2.	नख्तवाला तालाब	पावूसर	कोलायत	बीकानेर	1,39,608.00	60,039.00	1,99,647.00
3.	जलकुई	माणापील	जैसलमेर	जैसलमेर	75,000.00	–	75,000.00
4.	महिलाघट	भांवता	थानागाजी	अलवर	24,950.00	श्रमदान	24,950.00
5.	बराण की ढाणी का बांध	बराणा की ढाणी	जमवारामगढ़	जयपुर	6,050.00	श्रमदान	6,050.00
6.	अरवरी का बांध	हमीरपुर	थानागाजी	अलवर	3,393.00	श्रमदान	3,390.00

यू.एन.डी.पी. परियोजना के अंतर्गत किये गये जल संरक्षण कार्यों की सूची-वर्ष 2003-2004

क्र.	कार्य का नाम	गांव	तहसील	जिला	संस्था द्वारा भुगतान	श्रमदान/सहयोग	कुल खर्च
1.	रामसागर बांध	देवरी गुवाड़ा	राजगढ़	अलवर	16,269.00	5,801.00	22,070.00
2.	पीली जोहड़ी	देवरी बांकाला	राजगढ़	अलवर	92,287.00	18,389.00	1,10,676.00
3.	वाल वाली जोहड़ी	राड़ा	राजगढ़	अलवर	20,992.00	9,273.00	30,265.00
4.	कासली वाली जोहड़	लोसल ब्रह्मण	राजगढ़	अलवर	12,105.00	5,953.00	18,058.00
5.	बालक नाथजी का एनीकट	कांसला	राजगढ़	अलवर	1,900.00	श्रमदान	1,900.00
6.	गांव वाला जोहड़	नांडु	राजगढ़	अलवर	58,876.00	46,217.00	1,05,093.00
7.	नायाली वाला बांध	लिल्यां	राजगढ़	अलवर	7,250.00	श्रमदान	7,250.00

8.	बैठक वाला बांध	लोसल ब्रह्मण	राजगढ़	अलवर	12,100.00	श्रमदान	12,100.00
9.	भौमियां बाबा का बांध	माण्डलबास	राजगढ़	अलवर	15,220.00	श्रमदान	15,220.00
10.	तेजावाला बांध	लिल्यां	राजगढ़	अलवर	51,506.00	5,000.00	56,506.00
11.	सोना वाला बांध	राड़ा	राजगढ़	अलवर	1,61,364.00	85,600.00	2,46,964.00
12.	रूपनाथ जी का जोहड़	देवरी बांकाला	राजगढ़	अलवर	20,858.00	9,946.00	30,804.00
13.	लाम्बा पापड़ का जोहड़	लोसल	राजगढ़	अलवर	13,263.00	6,629.00	19,892.00
14.	कुरातली वाला जोहड़	घेवर	राजगढ़	अलवर	21,991.00	9,385.00	31,376.00
15.	भीम सागर	सरिस्का (क्रास्का)	राजगढ़	अलवर	54,805.00	–	54,805.00
16.	पाण्डू सागर	सरिस्का (क्रास्का)	राजगढ़	अलवर	57,847.00	1,940.00	59,787.00
17.	ढीमावाली जोहड़ी	लिलुण्डा	राजगढ़	अलवर	85,067.00	42,553.00	1,27,600.00
18.	आड़ी वाली जोहड़ी	डुमोली	थानागाजी	अलवर	17,108.00	4,226.00	21,334.00
19.	खायड़ा की जोहड़ी	रायपुरा भाल	थानागाजी	अलवर	4,600.00	श्रमदान	4,600.00
20.	भौमिया बाबा का बांध	निमाला गुवाड़ा	थानागाजी	अलवर	4,600.00	श्रमदान	4,600.00
21.	मालियों की जोहड़ी	गुढ़ामालियों की ढाणी	थानागाजी	अलवर	1,650.00	-	1,650.00
22.	उपरला बांध	निजरा (समरा)	थानागाजी	अलवर	60,040.00	34,557.00	94,597.00
23.	पापड़ा वाला एनीकट	बैराबास की ढाणी	थानागाजी	अलवर	6,550.00	श्रमदान	6,558.00
24.	लालोलाई की जोहड़ी	साक्ण्डकीढाणी	थानागाजी	अलवर	4,650.00	2,334.00	6,984.00
25.	भौमियां बाबा का बांध	गढ़ बसई	थानागाजी	अलवर	5,269.00	कार्य चालू है	5,269.00
26.	कुण्ड के पास वाली जोहड़ी	गढ़ बसई	थानागाजी	अलवर	4,680.00	2,340.00	7,020.00
27.	खारड़ा का एनीकट	निजरा (समरा)	थानागाजी	अलवर	41,325.00	1,400.00	42,725.00
28.	जालखी वाला जोहड़ी	चौसला	थानागाजी	अलवर	4,522.00	2,311.00	6,833.00
29.	पीपली वाली जोहड़ी	मालूताना	थानागाजी	अलवर	7,800.00	4,420.00	12,220.00
30.	गुढ़ा वढ़िया वाली जोहड़ी	गढ़ी	थानागाजी	अलवर	2,400.00	880.00	3,280.00
31.	कुल्हुरि का जोहड़	क्यारा	थानागाजी	अलवर	14,194.00	7,331.00	21,525.00
32.	रालाला बांध	जोगियों की ढाणी	थानागाजी	अलवर	38,810.00	कार्य चालू है	38,810.00
33.	पीपली वाली जोहड़ी	गलीकागुरु हमीरपुर	थानागाजी	अलवर	10,566.00	4,886.00	15,452.00
34.	कालकाला जोहड़	चावा का बास	थानागाजी	अलवर	23,595.00	7,872.00	31,467.00
35.	पीपली वाली जोहड़ी	सामरेड़	जमवारामगढ़	जयपुर	37,470.00	17,835.00	55305.00
36.	धोबीघाट वाला बांध	बराणा की ढाणी	जमवारामगढ़	जयपुर	31,508.00	15,755.00	47,263.00
37.	नई तलाई	कुम्हारोंकीघाटीडोगोता	जमवारामगढ़	जयपुर	17,500.00	–	17,500.00
38.	बाद्याला तलाई	डगोता	जमवारामगढ़	जयपुर	21,997.00	3,583.00	25,580.00
39.	ग्वाल गाता का जोहड़	बराणाकीढाणीरिक्शा	जमवारामगढ़	जयपुर	3,040.00	2,340.00	5,380.00
40.	लाल खम्भा वाली जोहड़ी	राम्यावाला	जमवारामगढ़	जयपुर	14,578.00	6,117.00	20,695.00
41.	चमन सागर	हरलोदा	नादौती	करौली	2,300.00	–	2,300.00

AUDITORS' REPORT

We have audited the attached consolidated Balance Sheet as at 31st March, 2004 of **M/s Tarun Bharat Sangh,** Jaipur (Activities from Bheekampura Kishori, Distt. - Alwar) and also the consolidated Income & Expenditure Account and Receipt & Payment Account for the year ended on 31st March, 2004 from the books of accounts, vouchers & other relevant records produced before us for our examination. These financial statement are the responsibility of the Institution's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates & valuation of material made by management, as well as evaluating the overall financial statement presentation. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

We report that :

(i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purposes of our audit;

(ii) In our opinion, proper books of account as required by law have been kept by the institutions so far as appears from our examination of those books.

(iii) The Balance Sheet, Income & Expenditure and Receipt & Payment Account dealt with by this report are in agreement with the books of account.

(iv) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts give a true and fair view in conformity with the accounting principles generally accepted in India :

(c) in the case of Balance Sheet, of the state of affairs of the Institution as at 31st March, 2004; and

(d) in the case of the Income & Expenditure Account, of the deficit of the Institution for the year ended on that date.

FOR GOYAL ASHOK & ASSOCIATES
CHARTERED ACCOUNTANTS

(A.K. GOYAL)
PROPRIETOR

JAIPUR
DATE : 25 Aug, 2004

TARUN BHARAT SANGH

CONSOLIDATED BALANCE SHEET AS ON 31.03.2004

LIABILITIES		AMOUNT	ASSETS		AMOUNT
General Reserve			Fixed Assets		
As per Annexure "A"		11,380,422.97	As per Annexure "B"		9,560,318.87
Endowment Fund (Ford Foundation, USA)			Cash in Hand		
From Grant	1,46,73,000.00		As per Annexure "C"		651,526.60
Interest on deposits	6,50,000.00	15,323,000.00			
			Cash at Bank		
Current Liabilities			As per Annexure "D"		1,041,576.99
M/s Manoj Trading Co.	17,885.00				
M/s Agarwal Traders	4,566.00		Fixed Deposits at Bank of Rajasthan Ltd.		
M/s Vinod Trading Co.	8,715.00		(Endowment Fund, Ford Foundation USA		
Image Makers	6,850.00		Out of Grant	14,673,000.00	
Kumar & Co.	4.070.00		Interest on deposits	650,000.00	15,323,000.00
Payable to Various Parties	8,50,000.00	892,086.00			
			Grant Receivable		
TDS Payable			From Sweeden Embassy		367,098.51
A.Y. 2001-2002	402.00		From C.S.W.B.		263,580.00
A.Y. 2004-2005	10,030.00	10,432.00			
			Advances to Workers and Others		398,840.00
		27,605,940.97			27,605,940.97

Notes on Accounts as per Annexure "E"

As per our Report of even date
For Goyal Ashok & Associates
Chartered Accountants

(A.K. Goyal)
Proprietor

Place : Jaipur
Dated : 25 Aug, 2004

For Tarun Bharat Sangh

General Secretary

TARUN BHARAT SANGH

CONSOLIDATED INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31.03.2004

EXPENDITURE	AMOUNT	INCOME	AMOUNT
To Physical Work		By Unutilised Balance b/f	1,418,894.36
Earthan Dam/Anicut Johad/School Building	5,788,918.00	By Grant Received from Sweeden Embassy	5,757,052.00
To Training/Awareness Camp Resources Programme			
Camp, Workshop, Exposure visit		Sonia Foundation	99.325.00
Foot March, Village Meeting Campaigns	1,380,447.00	Ministry of Rural Development of India (UNDP)	658,122.00
To Documentations			
Case Study, Books, Poster Printing, Photography, Documentary Film	591,686.15	By Interest Received on FDR	1,232,662.04
		By Misc. Receipts	82,381.00
To Donations	68,120.00		
		By Bank Interest	8,157.64
To Lodging & Boarding	372,319.00		
		By Sale of Books & Cassets	22,057.00
To Administrative Expenses			
(Honorarium, Travelling, Repairing, Insurance, Bank Charges, Stationery,		By Membership Fees	1,020.00
Postages etc.)	1,734,939.28	By Foreign Exchange Rate Difference	3,955.00
To Grant returned		By Amount Charged from Various	
OXFAM	252,000.00	Projects	
N.S.F.D.C., New Delhi	6,500.00	Lodging & Boarding Charges	354,777.00
		Transportation	118,000.00
To Amount of interest transferred to		By Expenses Recovered	11,530.00
Endowment Fund	325,000.00		
		By Grant Receivable from Sweeden Embassy, Delhi	367,098.51
To Grant due but not received			
Drought Proofing Program (Capart)	51,610.00		
P.H.D.R.D.F. New Delhi	83,301.00	By Deficit during the year	519,808.88
	10,654,840.43		10,654,840.43

As per our Report of even date

For Goyal Ashok & Associated
Chartered Accountants

(A.K. Goyal)
Proprietor

Place : Jaipur
Date : 25 Aug. 2004

For Tarun Bharat Sangh

General Secretary

TARUN BHARAT SANGH

CONSOLIDATED RECEIPT & PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31.03.2004

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
To Opening Balance		By Physical Work	
Cash in Hand	565,241.01	Earthan Dam/Anicut Johad/ School Building	5,788,918.00
Cash at Bank			
The Bank of Raj. Ltd. Jaipur	167,989.60	By Training/Awareness Programme Camp, Workshop, Exposure Visit Pad Yatra, Village Meeting, Campaigns	1,380,447.00
Alwar Bharatpur Gramin Anchlik Bank, Kishori			
A/c No. 764	159,770.39		
A/c No. 2459	1,090.00	By Documentations	
A/c No. 2330	210,705.50	Case Study, Books, Poster Printing Photography, Documentary Film	591,686.15
Fixed Deposit (GBK)	863,893.00		
		By Donations	68,120.00
SBBJ, Thanagaji	671.67		
		By Logding & Boarding	372,319.00
PNB, Umrain	148.00		
		By Administrative Expenses (Honorarium, Travelling, Repairing, Insurance, Bank Charges, Stationery, Postages etc.)	1,734,939.28
The Bank of Raj. Ltd., Riwali	1,296.00		
Arawali Kshetriya Gramin Bank Gadmora A/c No. 3123	507.00	By Payment of Gram Sabha Bhanvta Kolyala	15,000.00
Centurian Bank, Jaipur	8,269.15	By Payment to Surajmal & Brothers	5,974.00
To Grant Received from		By Payment against Outstanding Exp.	10,745.60
Sweeden Embassy	5,757,052.00	By Payment against Advances	60,000.00
Sonia Foundation	99,325.00	By TDS Deposited	7,829.00
Ministry of Rural Development of India (UNDP)	658,122.00		
		By Grant Refund to OXFAM	252,000.00
Droughat Proofing Programme, Capart	721,480.00		
		By Grant Refund to N.S.F.D.C., New Delhi	6,500.00
N.R.S.A.P., New Delhi	12,500.00		

RECEIPTS		AMOUNT	PAYMENTS		AMOUNT
To Charges Received From Various			By Capital Expenditure		
Projects			Land & Building	1,112,664.00	
Lodging & Boarding Charges		354,777.00	Furniture	13,428.00	
Transportation		118,000.00	Computer	48,325.00	
			Mixi	1,325.00	
To Sale of Books & Cassets		22,057.00	Mobile	4,150.00	1,179,892.00
To Interest Received on FDR		1,232,662.04	By FDR made out of Interest Received		325,000.00
To Capart YP Project		9,999.00	By Capart YP Project		9,999.00
To Miscellaneous Receipts		82,381.00	By Closing Balance		
			Cash in Hand		651,526.60
To Bank Interest		8,157.64			
			By Cash at Bank		
To Sale of Truck		140,000.00	The Bank of Raj. Ltd., Jaipur		69,948.64
To Membership Fees		1,020.00	Alwar Bharatpur Gramin Anchlik Bank, Kishori		
To Foreign Exchange Rate Difference		3,955.00	A/c No. 764		17,318.39
			A/c No. 2459		70,880.00
			A/c No. 2330		2,229.50
			PNB, Umrain		148.00
To Recovered against TDS		21,858.00	Fixed Deposit (GBK)		863,893.00
To Advances/Credit Balances			SBBJ, Thanagaji		671.67
M/s Image Makers	6,850.00				
M/s Kumar & Co.	4,070.00		Arawali Kshetriya Gramin Bank,		
Sundry Creditor against			Gadmora A/c 3123		507.00
(Physical Work)	850,000.00	860,920.00			
			Centurian Bank		15,980.79
To Advance recovered from Kumar & Co.		4,533.00			
To Expenses Recovered		11,530.00			
		13,502,472.62			13,502,472.62

As per our Report of even date

For Goyal Ashok & Associates
Chartered Accountants

For Tarun Bharat Sangh

General Secretary

TARUN BHARAT SANGH

CONSOLIDATED RECEIPT & PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31.03.2004

GENERAL RESERVE		**Annexure "A"**
Opening Balance		12,722,707.77
Add : Profit on Sale of Tractor (2000-01)		110,812.00
		12,833,519.77
Less :		
Assets Written Off during the year	774,315.92	
Loss on Sale of Old Truck (2003-04)	158,972.00	933,287.92
		11,900,231.85
Less : Deficit during the year		519,808.88
		11,380,422.97
CASH BALANCE		**Annexure "C"**
Head Office		77,647.75
Foreign Projects		573,878.85
		651,526.60
CASH AT BANK		**Annexure "D"**
Alwar Bharatpur Anchlick Gramin Bank		
A/c No. 764	17,318.39	
A/c No. 2459	70,880.00	
A/c No. 2330	2,229.50	90,427.89
PNB, Umrain		148.00
SBBJ, Thangaji		671.67
The Bank of Rajasthan Ltd. Jaipur		69,948.64
Arawali Kshetriya Gramin Bank		
A/c No. 3123		507.00
Centurian Bank, Jaipur		15,980.79
Fixed Deposit (GBK)		863,893.00
		1,041,576.99

For Tarun Bharat Sangh

General Secretary

M/S TARUN BHARAT SANGH

FIXED ASSETS **ANNEXURE "B"**

PARTICULARS	BALANCE AS ON 01.04.2003	ADDITION DURING THE YEAR	SOLD/WRITTEN OFF DURING THE YEAR	TOTAL AS ON 31.03.2004
Land & Building	5,118,641.97	1,112,664.00	-	6,231,305.97
Machinery	178,807.50	-	4,817.25	173,990.25
Electricity Fitting	51,320.80	-	-	51,320.80
Utencils	16,363.82	-	12,287.82	4,076.00
Furniture	169,181.62	13,428.00	61,364.00	121,245.62
Surgical & Other Equipments	329,017.68	-	320,830.00	8,187.68
Generator	142,481.85	-	102,481.85	40,000.00
Ambulance	231,000.00	-	231,000.00	-
Motor Cycles	387,257.00	-	-	387,257.00
Fans	13,405.25	-	-	13,405.25
Tata Truck	298,972.00	-	298,972.00	-
Jeeps	1,786,625.00	-	-	1,786,625.00
Photo Copier	130,853.55	-	-	130,853.55
Tractors	182,041.00	110,812.00*	-	292,853.00
Computers	236,855.00	48,325.00	21,100.00	264,080.00
Camera	40,000.00	-	-	40,000.00
Gysers	3,735.00	-	3,735.00	-
Mixer Grinder	3,200.00	-	3,200.00	-
Carpet	9,643.75	-	-	9,643.75
Live Stocks	13,500.00	-	13,500.00	-
Mixi	-	1,325.00	-	1,325.00
Mobile	-	4,150.00	-	4,150.00
	9,342,902.79	1,290,704.00	1,073,287.92	9,560,318.87

* Note : - Tractor A/c is debited by Rs. 110,812/- which has been wrongly credited by Rs. 320,000/- instead of Rs. 209,188/- in the year 2000-01, amount adjusted through General, Reserve.

For Tarun Bharat Sangh

General Secretary

M/S TARUN BHARAT SANGH BHEEKAMPURA (KISHORI)

ANNEXURE "E"

NOTES ON ACCOUNTS FORMING PART OF BALANCE SHEET AS AT 31.03.2004

1. The accounts are being prepared on historical cost basis and as a going concern Accounting policies not referred to otherwise are in consistent with the generally accepted accounting principles.
2. The accounts are being prepared on accrual basis.
3. The Head Office of the Institution has incurred and charged certain amounts from various projects under the following heads :

   (a) Lodging & Boarding — Rs. 3,54,777.00

   (b) Transportation /Jeep Fare — Rs. 1,18,000.00

   On the one side, such expenses have been shown as expenses under individual projects and on the other side, the Head Office of the Institution has treated these amounts as its income.
4. No depreciation has been charged on the fixed assets.
5. In some projects, the Institution has incurred expenses as per scheme of the project despite non receipt of grant amount from funding agencies. Accordingly, a sum of Rs. 6,30,678.51 have been shown as outstanding grant receivable.

FOR TARUN BHARAT SANGH

GENERAL SECRETARY

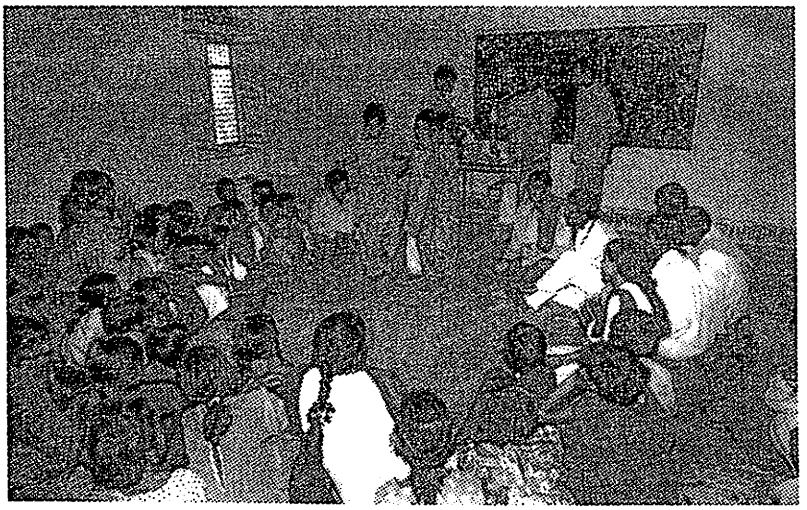

तरुण भारत संघ की तरुण शाला की छात्राओं को खेल-कूद प्रतियोगिता में छात्राओं को पारितोषिक देते हुए राजनारायण एवं अन्य साथीगण

ग्रामीण महिलाओं को जड़ी-बूटियों के विषय में जानकारी देते हुए तरुण भारत संघ के वैद्य सीताराम सैनी

अरवरी क्षेत्र में तरुण भारत संघ के महामंत्री कन्हैया लाल गुर्जर अकाल समीक्षा चेतना पदयात्रा की तैयारी करते हुए

Designed & Printed at Kumar & Company, Jaipur